



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

दुख्यति दुख्यी
इह दुक्कडेणं।
अपने दुष्कृत से दुःखी बना
हुआ प्राणी दुःख का ही
अनुभव करता है।

नई दिल्ली

● वर्ष 25 ● अंक 5 ● 6-12 नवंबर, 2023



प्रत्येक सोमवार

● प्रकाशन तिथि : 4-11-2023

● पेज : 12

● ₹10 रुपये

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के ५७वें राष्ट्रीय अधिवेशन 'नवोदय' का भव्य आयोजन बाह्य सौंदर्य की अपेक्षा आंतरिक सुंदरता का महत्त्व अधिक : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन, २६ अक्टूबर, २०२३

चित्त समाधि प्रदाता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी के जीवन में सुंदरता के प्रति आकर्षण रह सकता है कि सौंदर्य रहे। सौंदर्य अनेक संदर्भों में हो सकता है। आदमी कई बार सुंदर रहने का भी प्रयास कर सकता है।

दुनिया में अनेक आभूषणों का प्रयोग लोग करते हैं। आभूषणों के द्वारा दिखने में सुंदरता आ सकती है। साधु का आभूषण साधुपन होता है। बाह्य आभूषणों के प्रति आकर्षण हो सकता है, पर हम आंतरिक सौंदर्य पर ध्यान दें कि भीतर का सौंदर्य कैसे बढ़े। चेहरा कितना सुंदर है, इसका थोड़ा महत्त्व तो दुनिया में हो सकता है। चेहरा कैसा भी हो, है तो चमड़ी की चमड़ी। जवानी में जो सौंदर्य रहता है, वह वार्धक्य में नहीं रहता।



उसको मनुष्य तो क्या देवता भी उसके सामने प्रणत हो जाते हैं।

मूँह का आभूषण है—सत्य वाणी। झूठ से विरत रहना बहुत बड़ी तपस्या है। इस बार मुंबई में तो तपस्या की झड़ी सी लग गई थी। सत्य बोलने वाले का सम्मान बढ़ता है। कानों की शोभा है—श्रुत-ज्ञान की बातों को सुनो। कुंडल तो छोटी शोभा है। गुरु की वाणी को शास्त्रों की वाणियों को ज्ञानवान-कल्याणी वाणियों को सुनना यह कान की शोभा है। हमारा जो श्रद्धेय, उनकी वाणी को सुनना वो कान की आंतरिक शोभा है।

हृदय की शोभा है स्वच्छ विचार-स्वच्छ वृत्ति वो हृदय की आध्यात्मिक शोभा है। दिल में दया का भाव रहे। भुजाओं की शोभा है—हमारे में ताकत कितनी है। पौरुष हो जो किसी की सेवा कर सके।

(शेष पृष्ठ २ पर)



हमारी चेतना सुंदर होनी चाहिए। हाथ की सुंदरता है—दान दो। दूसरों का दुःख दूर करने का प्रयास हो। दान को हाथ की शोभा बताया गया है। मैं भी भूखा न रहूँ, साधु भी भूखा न जाए। संयमी शुद्ध साधु को दान देना, साधु की साधना में सहयोगी हो सकता है। वह तो आध्यात्मिक दान है।

दुनिया में अनेक दान चलते हैं। ज्ञान दान, अभयदान भी बड़े दान हैं। सिर का आभूषण बताया गया अपने धर्म गुरु के चरणों में प्रणाम करना। सिर हमारा उत्तम अंग है, यह हर किसी के सामने नहीं झुकता है। स्वाभिमानि कहलाने वाला आदमी, राजा उसका मस्तक भी साधु के समान झुक जाता है। धर्म में जो रमण करने वाला व्यक्ति है,

अभातेयुप के नव मनोनीत अध्यक्ष रमेश डागा

नंदनवन, मुंबई।



अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के ५७वें राष्ट्रीय अधिवेशन में सर्वसम्मति से कंटालिया निवासी, चेन्नई प्रवासी रमेश डागा को सत्र-२०२३-२०२५ के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में मनोनीत किया गया। रमेश डागा सहज, सरल, धीर-गंभीर और सेवाभावी व्यक्तित्व के धनी हैं। २५ नवंबर, १९७६ को चेन्नई में श्रीमती लीलाबाई-श्री मदनलाल डागा के घर आपका जन्म हुआ। बचपन से ही धार्मिक संस्कारों से ओत-प्रोत रमेश डागा ने बी०कॉम० स्नातक की डिग्री ग्रहण की। धर्मसहायिका के रूप में सरिता डागा और आपकी दो पुत्रियाँ देशना, खुशी तथा पुत्र चिरायु आपके हर कार्य में सहयोगी की भूमिका निभाते हैं। परिवार से आपके काका गौतम डागा ने वर्ष २००६-२०११ में अभातेयुप के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया है।

२००४ से स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद, चेन्नई में कार्यकर्ता, कार्यसमिति सदस्य सहित अनेक पदों पर अपनी सेवाएँ देते हुए वर्ष २०२०-२०२१ में अध्यक्षीय दायित्व ग्रहण किया और इस अध्यक्षीय कार्यकाल में दो आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, तीन डेंटल केयर, दो आचार्य महाश्रमण क्लिनिक, दो महाप्रज्ञ मेडिकल स्टोर एवं एक आचार्य महाप्रज्ञ प्रज्ञा केंद्र सहित अनेक विशिष्ट कार्य हुए और इस कार्यकाल को अभातेयुप द्वारा विशिष्ट परिषद के पुरस्कार से नवाजा गया। आचार्यप्रवर के चेन्नई चातुर्मास के दौरान आपने चातुर्मास व्यवस्था समिति में मंत्री के रूप में अपनी सेवाएँ दी तथा चारित्रात्माओं के चिकित्सकीय दायित्व को भी बखूबी संभाला।

रमेश डागा अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद में २००४ से अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। समिति सदस्य, क्षेत्रीय सहयोगी, कार्यसमिति सदस्य, आयाम प्रभारी के रूप में वर्षों तक अपनी सेवाएँ देने के पश्चात सत्र-२०१७-१८ में आपने सहमंत्री का दायित्व निर्वाह किया एवं सत्र २०२१-२३ में उपाध्यक्ष पद को सुशोभित किया। अभातेयुप के इन २० वर्षों के सफर में आपकी पहचान सेवाभावी और सरलतम व्यक्तित्व के रूप में रही। आचार्य भिक्षु की जनमभूमि से नाता रखने वाले रमेश डागा ने भिक्षु जन्मस्थली कंटालिया में निरंतर चार वर्षों से मंत्री के रूप में अपनी सेवाएँ दी तथा चेन्नई में दो स्कूलों तेरापंथ जैन विद्यालय में ट्रस्टी के रूप में भी मनोनीत हैं। पारिवारिक ज्वेलरी व्यवसाय में रत रमेश डागा प्रतिदिन सामायिक, माला आदि का नित्यक्रम रखते हैं और प्रतिवर्ष अनेक बार आचार्यप्रवर की सेवा में गुरुकुलवास में आते हैं। शासनमाला साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की भी आप पर विशेष कृपा रही और चेन्नई में पधारने वाले साधु-साध्वियों की सेवा सुश्रुषा में भी आप विशेष रुचि रखते हैं। सेवा के साथ इन्होंने अपने जीवन में ११,६,८,५ सहित अनेक बार तले की तपस्या की है और हर शुक्ल पक्ष की तेरस को उपवास रखते हैं। श्रावक के रूप में पहचान रखने वाले रमेश डागा के जीवन में श्रावक कार्यकर्ता के गुण देखे जा सकते हैं। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के ६ राष्ट्रीय अध्यक्षों के साथ कार्य करने का अनुभव आपके कार्यकाल एवं अभातेयुप को शिखर की ऊँचाइयाँ प्रदान करे। मंगलकामना-शुभकामना।



सच्चाई के साक्षात्कार के लिए विवेकपूर्वक बात को समझना आवश्यक : आचार्यश्री महाश्रमण



नंदनवन, २७ अक्टूबर, २०२३

महामनीषी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में भगवान महावीर से प्रश्न किया गया कि इस जम्बू द्वीप का यह भारत वर्ष है, इस अवसर्पिणी काल में देवानुप्रिय का तीर्थ कितने समय तक चलेगा? गौतम के नाम उत्तर दिया गया कि इस जम्बू द्वीप के भारत वर्ष में मेरा यह तीर्थ २१००० वर्ष तक रहेगा। यह एक भविष्यवाणी की सी बात है कि भगवान का शासन पंचम आरे की संपन्नता तक रहेगा।

प्रश्न उठता है कि यह तीर्थ जो साधु-साध्वी, श्रावक व श्राविका के रूप में है, वह २१००० वर्ष तक रहेगी? आगम की बात करते हुए निष्पक्ष भाव होना चाहिए। किसी ग्रंथ का अर्थ या किसी द्वारा कही गई बात का अर्थ करते समय निष्पक्षता का भाव बहुत महत्वपूर्ण होता है।

जो आग्रही है, पूर्वाग्रही है, पहले से बंधा हुआ है, वो युक्ति को भी जैसे-तैसे अपनी जो मति है, वहाँ ले जाने का प्रयास करता है। जो व्यक्ति पक्षपात या आग्रह से रहित है, उसकी जो युक्ति है, वो उसकी मति वहाँ जाती है जो युक्ति से संगत होती है। तटस्थ आदमी का मनरूपी बछड़ा युक्ति रूपी गाय के पीछे-पीछे चलता है।

अध्येता वह अच्छा होता है, जो मध्यस्थ हो। सच्चाई का साक्षात्कार करना है, तो हमें

वह मनरूपी बछड़ा बन युक्ति रूपी गाय के पीछे-पीछे चलेंगे तो हम अच्छा अध्येता बन सकेंगे। न्यायाधीश वही बढ़िया है, जो न मेरा है, न तेरा है, न्याय ही मेरा है। विवेकपूर्वक सही बात को समझने का प्रयास करें। किस संदर्भ में क्या बात कही गई है, उसको समझने का प्रयास करें। प्रतिपाद्य क्या है?

आज श्रीमद् जयाचार्य का जन्म दिवस है। वि०सं० १८६० आश्विन शुक्ला चतुर्दशी को उनका जन्म हुआ था। आचार्य भिक्षु से उनका कुछ साम्य भी प्रतीत हो रहा है। दोनों महापुरुष वि०सं० १८६० से जुड़े हैं। एक महाप्रयाण की दृष्टि से और दूसरे जन्म की दृष्टि से। दोनों ही कांठा-मारवाड़ से थे। दोनों का वर्ण श्याम था, दोनों की उम्र भी प्रायः समान थी। दोनों जीवन के ७८वें वर्ष में महाप्रयाण को प्राप्त हुए थे। दोनों ही आचार्यश्री जैन आगमों के विद्वान थे।

दोनों राजस्थानी भाषा के साहित्यकार थे। दोनों ने रागणियों में भी रचनाएँ की थीं। आचार्य भिक्षु तो हमारे आद्यप्रवर्तक थे ही पर जयाचार्य भी तेरापंथ में एक नया उन्मेष लाने वाले, नया वेग देने वाले, नया प्रस्थान कराने वाले कुछ अंशों में थे। तेरापंथ को नया संस्करण देने वाले श्रीमद् जयाचार्य थे। संघ में नवीनता को रूप दिया।

पूज्य जयाचार्य एक तत्त्ववेत्ता-ज्ञानमूर्ति के रूप में थे। अध्यात्म जगत के वे विशेष पुरुष थे। अंत समय में जीवन को साधना में

लगाया था, वे एक अध्यात्म योगी, विधि व्यवस्थापक पुरुष थे। वि०सं० १९३८ में भाद्रव कृष्णा-१२ को उनका जयपुर में महाप्रयाण हुआ था।

भगवान का प्रवचन या संघ भी तीर्थ कहलाता है। जैन शासन २१ हजार वर्ष तक रहेगा। हम जैन शासन तेरापंथ धर्मसंघ से जुड़े हैं। हमारा यह भैक्षव शासन है। अतीत में १० आचार्य हुए हैं। श्रीमद् जयाचार्य तेरापंथ महाग्रंथ को दूसरे संस्करण निकालने वाले आचार्य के रूप में देख रहा हूँ।

गुरुदेव तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी को तो हमने देखा है। गुरुदेव तुलसी के वाचना प्रमुखत्व में आगम संपादन का कार्य शुरू हुआ था। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी मुख्य संपादक थे। जोड़ रचना के संदर्भ में आगम संपादन करने वाले श्रीमद् जयाचार्य थे। अनेक साधु-साध्वियाँ आगम संपादन से जुड़े हैं। आगम-संपादन का कार्य शीघ्र संपन्न हो ऐसा प्रयास करें। मैं आगम पर्यवेक्षक के रूप में हूँ, इसलिए स्मरण करा रहा हूँ।

आज चतुर्दशी हाजरी का दिन है। कल शारदीय पूर्णिमा है। पूज्यप्रवर ने हाजरी का वाचन करते हुए प्रेरणाएँ प्रदान करवाईं। लेख पत्र का वाचन मुनि देवकुमार जी, मुनि विपुलकुमार जी, मुनि मेधावीकुमार जी एवं मुनि अनुशासन कुमार जी ने किया। समूह में लेखपत्र का वाचन हुआ।

आगे दीपावली आ रही है, दीपावली पर पटाखों से किसी की हिंसा या किसी का नुकसान न हो इस बात की सावधानी रहे।

धागे के विधायक संजीव नायक पूज्यप्रवर की सन्निधि में पहुँचे। उन्होंने अपने कालेज में दीक्षा महोत्सव करवाने की पूज्यप्रवर से अर्ज की।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि हम अपने आंतरिक व्यवहार को देखें। हम अपने आपको देखने के लिए अपना आत्म-निरीक्षण करें। आत्म-निरीक्षण करने वाला चिंतन करे कि मैंने क्या किया, क्या नहीं किया। क्या करना शेष रह गया है। कौन सा ऐसा कार्य था जो मैं कर सकता था पर नहीं किया। हम स्वयं की आत्मा को जानें। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जीवन में अहिंसा, नैतिकता और खान-पान में शुद्धता हो : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन, ३१ अक्टूबर, २०२३

आज कार्तिक कृष्णा तृतीया है। आज से लगभग १२६ वर्ष पूर्व सुजानगढ़ में हमारे षष्ठमाचार्य पूज्य माणकगणी का महाप्रयाण हो गया था। वे सरदारशहर में युवाचार्य-आचार्य बने थे। आज उनका १२७वाँ महाप्रयाण दिवस है।

आस्था के अनन्य केंद्र आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आगम वाणी का रसास्वाद कराते हुए फरमाया कि धर्म की साधना सामान्य घर में, सामान्य परिवार में पैदा हुआ आदमी कर सकता है, तो उच्च घरानों में, राजघरानों में पैदा हुए लोग भी धर्म के पथ पर आगे बढ़ सकते हैं। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी छोटे से गाँव से साधु बन गए तो पूज्य माणकगणी तो बड़े शहर से थे। भीतर में जो क्षयोपशम है, वह महत्त्वपूर्ण है। गाँव या नगर नहीं।

बालक माणक पर जयाचार्य की दृष्टि पड़ी थी। उनकी दीक्षा में जयाचार्य की भी प्रेरणा रही। जयपुर शहर से माणक जैसा बालक धर्मसंघ को साधु रूप में प्राप्त हुआ जो हमारे षष्ठम आचार्य बने थे। सरदारशहर में मधवागणी ने मुनि माणक को युवाचार्य पद पर स्थापित किया था। तीन दिन बाद मधवागणी के महाप्रयाण के पश्चात वे आचार्य पद पर आरूढ़ हुए थे। पूज्य माणकगणी के मन में धर्मसंघ में कुछ नवीनता लाने का चिंतन था, पर कार्तिक कृष्णा वि०सं० १९५४ को सुजानगढ़ में महाप्रयाण हो गया था। हम परम पूज्य माणकगणी के प्रति अभ्यर्थना अभिव्यक्त करते हैं। भगवती सूत्र में राजकुलों के बारे में बताया गया है—उग्र, भोज, राजन्य, इच्छवाकु नाम और पौरव ये छः उच्च राजकुल के नाम दिए गए हैं। यहाँ प्रश्न किया गया है कि ये राजकुल के व्यक्ति साधना कर सिद्धत्व को प्राप्त हो सकते हैं? उत्तर दिया गया है गौतम! इन राजकुलों से भी लोग दीक्षित हो धर्म साधना कर आठों कर्मों का क्षय करते हैं। राजकुल के लोग भी धर्म और साधुत्व को स्वीकार कर सकते हैं। वे सांसारिक कार्य में ही नहीं, धर्म में भी शौर्य का उपयोग कर सकते हैं।

जैन शासन में ऐसे व्यक्ति भी दीक्षित हुए हैं, कई श्रावक बने हैं, जो क्षत्रिय और राजकुलों में पैदा होने वाले लोग हैं। राजनीति भी कार्य करने का एक कार्यक्षेत्र है। राजनीति के लोग भी शुद्धता-न्याय-नीति का ध्यान रखें। राजनीति में सेवा की भावना और धर्म प्रभावित राजनीति रहे। जीवन में अहिंसा, नैतिकता और खान-पान में शुद्धता हो।

एक समय तक राजनीति कर बाद में धर्म नीति में लग जाएँ। उग्र आने के पश्चात जीवन में मोड़ लेना चाहिए। समाज में भी धार्मिक, आध्यात्मिक सेवा दें। रामायण में भी यही बताया गया है कि उग्र के बाद धर्म को जोड़ लेना चाहिए। साधु भी युवावस्था में लंबी यात्रा कर सकता है। गृहस्थ भी ५० की उम्र के बाद रोज एक सामायिक करने का प्रयास करे। हम सभी धर्म की साधना करने का प्रयास करें, यह काम्य है। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

ज्ञान विकास के उत्कृष्ट भंडार है आगम : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन, ३० अक्टूबर, २०२३

शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि प्रश्न किया है—भते! प्रवचन-प्रवचन है, प्रावचनी-प्रवचन है? प्रवचन और प्रावचनी दो शब्द प्रयोग किए हैं। प्रवचन-प्रकृष्ट वचन, बहुत अच्छा वचन और प्रवचन करने वाला। अर्हत् तीर्थकर होते हैं, वह नियमतः प्रावचनी होते हैं।

प्रवचन जो आगम या द्वादशांगी या गणी पीटक हैं, वे आचार्य की मंजुषा होते हैं। श्रुत आचार्य की एक संपदा होती है। आचार्य की कई संपदाएँ होती हैं। आचार्य के पास स्वर्ण मंजुषा नहीं होती है, पर आचार्य स्वर्ण के गुण ले सकता है। आचार्य के पास तो आगम मंजुषा चाहिए। आचार्य तो तीर्थकर या आगम की बात के एक आधार हैं। तीर्थकर तो ऐसा कहते हैं कि मैं यह कह रहा हूँ पर आचार्य तो यह कहते हैं कि भगवान ने आगम में यह कहा है। प्रवचन आगम, द्वादशांगी बारह अंगों वाला है—आचारंग (आयारो) आदि। सूयगडों में भगवान महावीर की स्तुति हो ठाण में १ से लेकर १०-१० के दस स्थान हैं। समवायों ठाण की तर्ज पर ही है। व्याख्या प्रज्ञप्ति-भगवती सूत्र है। छठा आगम है—ज्ञाता धर्मकथा इसमें कई घटना-प्रसंग हैं। उपासक दशा में श्रावकों के वर्णन हैं। अंतगड दसाओं और अनुत्तरोपपातिक दशा प्रश्न व्याकरण, विवागसूयं और दृष्टिवाद। तीर्थकरों की वाणी कल्याणी होती है।

अभी हमें यहाँ तीर्थकर उपलब्ध नहीं है, पर आगम हमारे पास है। ये आगम हमारे मार्गदर्शक-दिशा निर्देशक, एक आधार हैं। इस चतुर्मास में मुझे भगवती सूत्र के बारे में कुछ बताने का अवसर मिला है। प्रवचन करना बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य होता है। प्रवचन से लोगों को धर्म में आगे बढ़ने की प्रेरणा प्राप्त हो सकती है। चारित्रात्माएँ भी प्रवचन करने का लक्ष्य रखें। आठ प्रहर में एक बार प्रवचन हो जाए।

आगम तो ज्ञान विकास के उत्कृष्ट भंडार हैं। हम सभी अपना ज्ञान बढ़ाने का प्रयास करें। पर ज्ञान का घमंड न हो। ज्ञान तो अनंत है। जो अपने अज्ञान को पहचान ले, वह सबसे बड़ा ज्ञानी होता है। तीर्थकरों के सामने तो हमारे में अल्प ज्ञान है। हम ज्ञान का विकास करते रहें।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

बाह्य सौंदर्य की अपेक्षा आंतरिक सुंदरता का...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

गृहस्थों में बाह्य भौतिक आभूषण चलते हैं, पर गृहस्थ आभूषणों को अधिक महत्त्व न दें। हमारे संतों का शरीर सबल रहे ताकि सेवा कर सकें। साधु तो बिना बाह्य आभूषण के भी सुंदर लगता है। गुरुदेव तुलसी के बारे में तो कहा गया है—कानों की छटा—किसने सौंदर्य सजाया रे। महाप्राण गुरुदेव। गुरुदेव तुलसी की तो पुण्याई विशेष थी। उनके शरीर की भी सुंदरता थी। दीपता चेहरा था। उससे बड़ी चीज उनका आचार्यत्व-साधुत्व था।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का ज्ञान बहुत निर्मल था। राष्ट्रपति अब्दुल कलामजी अनेक बार उनके पास आए थे। साधुता विशेष आकर्षण होता है। सद्गुण संपन्नता हमारे जीवन में अच्छी रहे। सद्गुणों से विभूषित हमारा जीवन रहे। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि आगमों में चार समाधि का उल्लेख आया है—श्रुत, स्वास्थ्य आदि। ज्ञान, तप, विनय और श्रुत के द्वारा हम समाधि को प्राप्त कर सकते हैं। समाधि वह अवस्था है, जिससे व्यक्ति को अपने स्वरूप का आभास होता है। वह राग और द्वेष से ऊपर उठकर समता में प्रतिष्ठित हो जाता है। वह समाधि का अनुभव करता है।

अभातेयुप के ५७वें राष्ट्रीय सम्मेलन 'नवोदय' का तीसरा दिन। सूरत परिषद को श्रेष्ठ परिषद के रूप में नवाजा गया। आचार्य महाप्रज्ञ प्रतिभा पुरस्कार यूएसए के अजय भूतोड़िया को प्रदान किया गया। प्रशस्ति पत्र का वाचन पंकज डागा ने किया। अजय भूतोड़िया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया कि कर्मवाद के आलोक में हम जीवन की व्याख्या कर सकते हैं। प्रतिभा संपन्नता में ज्ञानावरणीय कर्म का विलय होता है। कर्मवाद को समझने के बाद आदमी अपना विकास कर सकता है।

अभातेयुप नवनिर्वाचित अध्यक्ष रमेश डागा, चेन्नई को पूर्व अध्यक्ष पंकज डागा ने शपथ ग्रहण करवाई। पूज्यप्रवर ने दोनों को मंगलपाठ सुनाया। रमेश डागा व पंकज डागा ने पूज्यप्रवर से कुछ संकल्प स्वीकार किए। नवनिर्वाचित अध्यक्ष रमेश डागा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति देते हुए भावी आयामों को बताया। रमेश डागा ने अपने पदाधिकारियों व कार्यकारिणी की घोषणा करते हुए उन्हें शपथ दिलाई। पूज्यप्रवर ने नवीन कार्यसमिति को मंगलपाठ सुनाया। रमेश डागा ने अपनी नवगठित कार्यकारिणी को शपथ दिलाई।

दीक्षार्थी धनराज बैद का मंगलभावना समारोह

शाहदरा, दिल्ली।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में दिल्ली सभा एवं शाहदरा सभा के तत्वावधान में दीक्षार्थी भाई धनराज बैद का मंगलभावना समारोह 'वर्धापना वैराग्य की' कार्यक्रम आयोजित हुआ। विशाल जनमेदिनी ने अणुव्रत गौरव, शासनसेवी, दिल्ली के लाइले सपूत धनराज बैद को शुभकामनाओं का उपहार संप्रेषित किया।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि भगवान महावीर ने चार वस्तुओं को दुर्लभ बताया है, उनमें एक है—संयम में पराक्रम। संयम में पराक्रम करने वाले विरले ही व्यक्ति होते हैं। उन विरल व्यक्तियों में एक नाम है धनराज बैद का। सतहत्तर वर्षीय प्रतिमाधारी श्रावक धनराज बैद संयम-ग्रहण कर अपने नाम को सार्थक कर रहे हैं एवं संयम रूपी धन को प्राप्त कर जीवन को धन्य बना रहे हैं।

धनराज बैद अभ्युदय की अभिनव दिशा को उद्घाटित करने के लिए कटिबद्ध हैं। इनके हृदय में शक्ति, भक्ति, श्रद्धा व समर्पण का दरिया हिलोरे ले रहा है। इनके रोम-रोम में संघभक्ति व गुरुशक्ति का नाद अनुगूँजित हो रहा है। ये उम्र से जरूर सतहत्तर वर्ष के हैं पर उत्साह, स्फूर्ति जवानों से बढ़कर है। सी०ए०, सी०एस० जैसी महत्त्वपूर्ण डिग्रियों के धारक धनराज बैद उम्र के इस पड़ाव में अपने आपको गुरु चरणों में सर्वात्मना समर्पित कर आनंद की अनुभूति कर रहे हैं। धनराज बैद ने अनेक केंद्रीय संस्थाओं, दिल्ली की संस्थाओं तथा

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय में काम करके संस्थाओं के गौरव को अभिवर्धित किया है। २२ नवंबर को पूज्यप्रवर के करकमलों से संयमश्री का वरण कर साधना के तेज से जीवन को तेजस्विता का वरण करें एवं गण के गौरव को बढ़ाएँ। शुभ भविष्य की मंगलकामना।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा कि धनराज बैद संयम के कंटकाकीर्ण पथ पर बढ़ने के लिए वज्र संकल्पित है। अनुस्रोत से प्रतिस्नोत की ओर बढ़ने के लिए चरणों को गतिमान किया है। हम आपके संकल्प की बढ़ते कदमों का अभिनंदन कर रहे हैं।

साध्वी डॉ० सुधाप्रभा जी ने कहा कि असंयम के कोलाहल में संयम का शंखनाद करने वाले भाई धनराज बैद संयम के ओलंपिक में भाग लेने जा रहे हैं। संयम के ओलंपिक में उत्साह व उमंग के साथ खेलना है।

साध्वी समत्वयशा जी ने भिक्षु स्तुति, तेरापंथ स्तुति एवं मंगलभावना के गीत के द्वारा कार्यक्रम में समां बांधा।

दीक्षार्थी धनराज बैद ने कहा कि हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें जिन शासन में तेरापंथ धर्मसंघ मिला है। भिक्षु संघ के मालिक आचार्य महाश्रमण जी सूर्य के समान तेजस्वी एवं प्रतापी शासक हैं। आचार्य तुलसी ने मेरे जीवन का निर्माण किया। आचार्य महाप्रज्ञ जी ने मुझे संघ की सभा-संस्थाओं में काम करने का अवसर प्रदान किया। मेरे परम उपकारी आचार्य महाश्रमण जी मुझे संयम-रत्न प्रदान कर

मेरे चिर लक्ष्य को पूरा कर रहे हैं। तीन-तीन आचार्यों से मैंने कृपा प्राप्त की है। मैं श्रद्धानत होकर भावप्रणत हूँ। मेरे ऊपर साध्वी अणिमाश्री जी का भी उपकार रहा है। आपने भी मुझे जीवन निर्माण एवं साधना के महत्त्वपूर्ण सूत्र प्रदान किए। धनराज बैद ने अपने परिवार एवं दिल्ली समाज के श्रावक-श्राविकाओं के प्रति भी अहोभाव प्रकट करते हुए सभी की मंगलकामनाओं को तहेदिल से स्वीकार किया।

कार्यक्रम में अजातशत्रु मांगीलाल सेठिया, भगवान महावीर मेमोरियल के अध्यक्ष के०एल० जैन पटावरी, दिल्ली सभाध्यक्ष सुखराज सेठिया, शाहदरा सभाध्यक्ष पन्नालाल बैद, गांधीनगर सभाध्यक्ष कमल गांधी, निगम पार्षक पंकज लूथरा, पूर्वी दिल्ली महिला मंडल अध्यक्ष सरोज सिपानी, गाजियाबाद सभा मंत्री रमेश बैंगानी, तेयुप अध्यक्ष पवन पारख, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष मनोज बरमेचा, टीपीएफ से नवनीत दुगड़, कार्यक्रम के सह-संयोजक, ओसवाल समाज के अध्यक्ष आनंद बुच्चा आदि अनेक सदस्यों एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने किया। शाहदरा सभा के मंत्री सुरेश सेठिया एवं दिल्ली सभा के उपाध्यक्ष प्रदीप संचेती ने अभिनंदन पत्र का वाचन किया। आभार ज्ञापन कार्यक्रम संयोजक बाबूलाल दुगड़ ने किया। सभी सभा-संस्थाओं की ओर से दीक्षार्थी भाई का सम्मान हर्ष व उल्लास के साथ किया।

कब से चली दीपावली

● मुनि कमल कुमार ●

कब से प्रारंभ हुई है शुभ दीपावली।
यह स्वर सुनाई देता है घर-घर गली-गली।

पर जरा सोचो? यह प्रथा कब से कैसे चली इस अवसर पर कैसे दीपक और मोमबत्तियाँ जलीं तब स्मृति में आया कि उस दिन हुआ था महावीर का निर्वाण और गौतम स्वामी को हुआ था केवलज्ञान उस अमावस्या की मध्य रात्रि में अंधकार वे अनुमान पावा के लोगों का जब गया उसे मिटाने पर ध्यान राजा हस्तिपाल ने भी किया शीघ्र आह्वान इसे अंधेरे को मिटाने घर-घर घी के दीपों का चला अभियान क्योंकि उस समय तक नहीं हुआ था बिजली का निर्माण परंतु अब तो चारों ओर बिजली का प्रकाश है, फिर दीपक जलाने का क्यों किया जा रहा प्रयास है। हिंसा के अल्पीकरण से ही असली विकास है अंतर जागृत होने से ही असली उजास है। यह मेरी अंतर हृदय की अरदास है।

स्वल्प पंक्तियों में जैनों की दीपावली का यह इतिहास है।
कमल तो अहिंसा का पुजारी महावीर महाश्रमण का दास है।।

मंगलभावना समारोह का आयोजन

पीतमपुरा, दिल्ली।

शासनश्री साध्वी रतनश्री जी खिलौनी देवी धर्मशाला का चार महीनों का सुखद प्रवास परिसंपन्न कर आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार शालीमार बाग, गीयल भवन में पधार रही हैं, उसके उपलक्ष्य में पीतमपुरा तेरापंथ सभा एवं धर्मशाला परिवार द्वारा मंगलभावना समारोह आयोजित किया गया।

शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि यह पीतमपुरा क्षेत्र दिल्ली में साधु-साध्वियों के चातुर्मासिक क्षेत्रों में पुराना क्षेत्र है। यहाँ की जनता में धार्मिक संस्कार गहरे हैं। यहाँ पर चातुर्मासिक काल में जो-जो अच्छे कार्य हुए हैं वे सब गुरुकृपा का फल है। जो नहीं हुए हैं वह हमारी कमी से नहीं हुए हैं। साध्वीश्री जी ने कहा कि मैं यही कहना चाहती हूँ कि आगंतुक साधु-साध्वियों की हमारे से भी अधिक सेवा करना जो पाया है वह सुरक्षित रखना।

साध्वीवृंद ने सुमधुर गीत का संगान किया। शासनश्री साध्वी सुव्रताजी, शासनश्री सुमनप्रभा जी ने अपना संबोधन प्रदान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ उत्तर दिल्ली महिला मंडल ने मंगल गीत से किया।

तेरापंथ महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़, तेयुप के मंत्री अमित डूंगरवाल, पीतमपुरा तेरापंथ सभा अध्यक्ष प्रवीण बैंगानी, मनफूल देवी, पीतमपुरा सभा उपाध्यक्ष, शालीमार बाग तेरापंथ सभा अध्यक्ष सज्जन देवी गिडिया, धर्मशाला परिवार से राकेश, ललित, महेश, पश्चिम दिल्ली महिला मंडल अध्यक्ष रीटा चोरड़िया, मधु सेठिया अध्यक्ष महिला मंडल-उत्तर आदि अनेक वक्ताओं ने मंगलभावना व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन पीतमपुरा सभा के मंत्री सुरेंद्र मालू ने किया।

मातृ शक्ति सम्मेलन का आयोजन

पचपदरा।

तेरापंथ सभा भवन में शासनश्री साध्वी सत्यवती जी के सान्निध्य में आदर्श विद्या मंदिर माध्यमिक द्वारा मातृ शक्ति सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसके अंतर्गत साध्वी शशिप्रज्ञा जी ने बताया कि माँ में ऐसी शक्ति है जो बच्चों के अंदर विभिन्न संस्कार रूपी रंगों को भरकर सुंदर चित्रण समाज के सामने प्रस्तुत कर सकती है। शासनश्री साध्वी सत्यवती जी ने कहा कि माँ में वह निर्माण शक्ति है जो किसी भी चीज को शून्य से अनंत तक ले जा सकती है और अद्भुत व्यक्तित्व बनाने में सफल हो सकती है।

मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित भगवतदान चारण ने कहा कि संस्कारों का बीजारोपण कर वटवृक्ष का आकर्षित वन तैयार हो सकता है। आदर्श विद्या मंदिर के बच्चों ने अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं में अपने भावों की प्रस्तुति दी और आपसी वार्तालाप के द्वारा माहौल को रोमांचक बनाया गया। कार्यक्रम में जिला सचिव भगवतदान चारण, स्थानीय समिति के व्यवस्थापक एवं जिला कार्यकारिणी के कर्ता मांगीलाल ढेलड़िया, तेमम अध्यक्ष भाग्यवती चौपड़ा और आदर्श विद्या मंदिर के कार्यकर्ता, बच्चे और उनकी माताएँ उपस्थित थीं। कार्यक्रम का संचालन राजपाल प्रजापति व मंगलाचरण विद्यालय के बच्चों द्वारा किया गया।

त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

तिरुपुर।

तेरापंथ सभा द्वारा साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में नमस्कार महामंत्र के साथ त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर शुरू किया गया। पहले सत्र में आसन, प्राणायाम और प्रेक्षाध्यान के प्रयोग मुख्य प्रशिक्षक विमल गुनेचा द्वारा करवाए गए। इस शिविर में ६७ प्रतिभागियों ने भाग लिया।

शिविर के दूसरे चरण की शुरुआत में साध्वीवृंद ने प्रेक्षा गीत का संगान किया। साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने कहा कि प्रेक्षाध्यान शिविर की योजना जयपुर में की गई और सरदारशहर में इसके पहले शिविर का आयोजन किया गया।

ध्यान का अर्थ स्वयं को देखने की पद्धति है। साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि हमारा जीवन एक कुरुक्षेत्र है। शारीरिक, मानसिक आदि इन सभी परिस्थितियों में हम सम कैसे रह सकते हैं, उसका सबसे सुंदर माध्यम है—प्रेक्षाध्यान। मुख्य प्रशिक्षिका विमल गुनेचा ने कहा कि संकल्प शक्ति मजबूत रहे उसके लिए हमारे जीवन में ऐसे प्रयास होने चाहिए कि जिसके माध्यम से हम संकल्पित रह सकें। प्रेक्षाध्यान से जीवन

के तत्त्वों को समझने का मौका मिलता है।

सभा अध्यक्ष अनिल आंचलिया ने सभी शिविरार्थियों एवं मुख्य प्रशिक्षक व सभी का स्वागत किया। संतोष सिंघवी ने प्रशिक्षक का परिचय करवाया। शिविर संयोजक शांतिलाल झावक ने शिविर की जानकारी प्रदान की। सभा मंत्री मनोज भंसाली ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। उसके पश्चात विभिन्न सत्रों में प्रेक्षा गीत अभ्यास, कायोत्सर्ग, अनुप्रेक्षा, समताल श्वास, यौगिक क्रियाएँ, गमन योग मंगलभावना आदि करवाए गए। कार्यक्रम का संचालन सह-संयोजक जितेंद्र भंसाली ने किया।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला के दूसरे दिन का कार्यक्रम साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में नमस्कार महामंत्र शुरू हुआ। कार्यशाला के दूसरे दिन लगभग ६५ प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रेक्षा गीत का अभ्यास सभी शिविरार्थियों ने किया।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने प्रेक्षाध्यान का महत्त्व बताया। साध्वी मयंकप्रभा जी ने प्रेक्षाध्यान की ५ उपसंपदा के बारे में विस्तृत जानकारी दी। साध्वीवृंद ने गीत के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी। मुख्य प्रशिक्षक विमल गुनेचा ने प्रेक्षाध्यान के १५ अंगों का विवेचन किया।

ज्ञान विकास के उत्कृष्ट भंडार...

(पृष्ठ २ का शेष)

मोतीलाल दुगड़ (बीकानेर-नेपाल) ने अपनी आत्मकथा 'कृषिकर्म से जल विद्युत तक' पूज्यप्रवर को समर्पित की। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया। मोतीलाल दुगड़ ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि अगर वैशिष्ट्य को प्राप्त करना चाहते हो तो विशेषताओं में मन को नियोजित करना होगा। हमें गुण संपन्न जीवन जीना है। हर प्राणी में, द्रव्य में कुछ न कुछ तो गुण अवश्य होता है। द्रव्य का पर्याय बदलता रहता है, पर गुण नहीं बदलते। हम हर जीव, द्रव्य से प्रेरणा ले सकते हैं। प्रेरणा से आदमी सफलता को प्राप्त हो सकता है।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि जो व्यक्ति बड़ों की बात को ध्यान में रखकर आगे बढ़ता है, वह सफल हो सकता है।



महिला मंडल के विविध आयोजन



प्लेग्रुप तत्त्वज्ञान का आयोजन

नंदनवन, मुंबई।

तेममं, मुंबई द्वारा आयोजित कार्यशाला 'प्लेग्रुप तत्त्वज्ञान' का आयोजन हुआ। आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में एवं साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी की प्रेरणा से कार्यशाला में लगभग 909 बहनों ने एडमिशन लिया। आचार्यश्री ने फरमाया कि परिवार में शनिवार की सामायिक, नशामुक्त जीवन और आध्यात्मिकता बनी रहे।

मुख्य वक्ता साध्वी प्रांजलयशा जी ने नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला की शुरुआत की। तत्त्व क्या है इस पर प्रकाश डालते हुए 25 बोल के पहले चार बोलों को उदाहरणों के माध्यम से समझाया। सभी बहनों की जिज्ञासाओं का समाधान किया।

संचालन मंत्री संगीता चपलोट ने किया। सारिका बाफना और सपना डागलिया का विशेष योगदान रहा।

द पावर ऑफ रीडिंग कार्यशाला का आयोजन नोखा।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं, नोखा ने शासन गौरव साध्वी राजीमती जी के सान्निध्य में 'द पावर ऑफ रीडिंग' कार्यशाला का आयोजन किया। तेममं की अध्यक्ष सुमन मरोठी ने सभी का स्वागत एवं कार्यक्रम का संचालन किया। तेममं की युवती बहनों ने गीत का संगान किया। साध्वी प्रभातप्रभा जी ने कहा कि स्वाध्याय करने से हमारी सोच पॉजिटिव होती है व स्वाध्याय करने से शक्ति मिलती है अज्ञान का अंधेरा दूर होता है। स्वाध्याय को अपने जीवन का अच्छा साथी बनाएँ।

साध्वी पुलकितयशा जी ने भी अपने विचार रखे। स्वाध्याय को अपने जीवन में उतारें तथा बच्चों में भी पढ़ने के संस्कार डालें। उन्होंने कहा कि किताबें हमारी सबसे अच्छी दोस्त व शिक्षक हैं। उपासक अनुराग बैद ने स्वाध्याय के फायदे बताए। सभा के उपाध्यक्ष सुनील बैद, उपासिका निर्मला सेठिया, समता बैद, मोनिका बैद, मंत्री प्रीति मरोठी, कन्या मंडल सह-संयोजिका मुस्कान रांका, इंद्रचंद्र बैद व बैंगलोर से पधारे बहादुरमल सेठिया आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। सभी का आभार ज्ञापन प्रीति मरोठी ने किया।

हिसार

तपोमूर्ति मुनि पृथ्वीराज जी स्वामी के सान्निध्य में अभातेममं, हिसार द्वारा निर्देशित कार्यशाला 'द पावर ऑफ रीडिंग' का आयोजन रावलवासिया धर्मशाला में किया

गया। कार्यशाला की शुरुआत मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से की गई। तत्पश्चात महिला मंडल द्वारा प्रेरणा गीत का संगान हुआ।

द पावन ऑफ रीडिंग पर महिला मंडल की अध्यक्ष जयश्री जैन, रविकांता जैन, सुमन जैन, प्रीति जैन और दीपा जैन द्वारा अपने विचार व्यक्त किए गए। मुनि जिज्ञासुजी ने एक गीतिका के माध्यम से स्वाध्याय पर अपने विचार रखे।

द पावर ऑफ रीडिंग पर मुनि पृथ्वीराज जी ने आइंस्टीन और महात्मा गांधी के उदाहरण के माध्यम से स्वाध्याय की महत्ता के बारे में बताया। मुनिश्री ने आगे बताया कि भगवान महावीर ने भगवती सूत्र में कहा है कि जो मुमुक्षु जीव पूर्व और पश्चिम रात्रि में धम्म जागरणा और स्वाध्याय नहीं करता उसके द्वार पर आया हुआ ज्ञान, दिव्य-ज्ञान वापस लौट जाता है, अतः स्वाध्याय सलक्ष्य होना चाहिए।

कार्यक्रम के दौरान मंच संचालन व आभार ज्ञापन महिला मंडल की मंत्री सविता जैन द्वारा किया गया।

पचपदरा।

तेममं के तत्त्वावधान में शासनश्री साध्वी सत्यवती जी के सान्निध्य में 'द पावर ऑफ रीडिंग' कार्यशाला का आयोजन किया गया। साध्वी पुण्यदर्शना जी ने कहा कि रीडिंग से हम आग्रह मुक्त व अपने चिंतन को स्वस्थ बनाकर अच्छे चारित्र का निर्माण कर सकते हैं।

शासनश्री साध्वी सत्यवती जी ने कहा कि शिक्षा बिना जीवन अधूरा है और शिक्षा व आचार का जब मिलाप होता है व काले-काले समायरे का आचरण होता है। तो सुंदर व्यक्तित्व का निर्माण हो सकता है। महिला मंडल अध्यक्षा भाग्यवती चौपड़ा ने अपने भावों को व्यक्त किया। कार्यक्रम का प्रारंभ प्रेरणा गीत से हुआ। संचालन मंत्री ललिता चौपड़ा ने किया।

रिशों की डोर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

चेन्नई।

'रिशों की डोर' का सांस्कृतिक कार्यक्रम चेन्नई शहर में मेघा हॉल म्यूजिक एकेडमी में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण से किया। स्वागत स्वर से तेममं की पूरी टीम ने सभी अतिथिगण का अभिनंदन किया। अध्यक्षा लता पारख ने अपना स्वागत वक्तव्य से सभी का अभिवादन किया। विक्री दी पारेख ने

गीतिका से सभी को भाव-विभोर बना दिया।

सभी संघीय संस्थाओं के पदाधिकारीगण उपस्थित थे। तेममं, चेन्नई कार्यक्रम के मुख्य अनुदानदाता महावीर बोहरा, छत्रमल बैद, विजयराज कटारिया, रंजीतमल छल्लानी, प्यारेलाल पितलिया, जितेंद्र मांडोत, चंपालाल कटोटिया, केवलचंद्र मांडोत एवं सभी का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री हेमलता नाहर ने किया। रिमा सिंघवी और वंदना पगारिया ने समापन सत्र का संचालन किया।

द पावर ऑफ सबकॉन्सियस माइंड अररिया कोर्ट।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं, अररिया कोर्ट के तत्त्वावधान में तेरापंथ भवन में 'द पावर ऑफ रीडिंग' एवं 'द पावर ऑफ सबकॉन्सियस माइंड' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के द्वारा किया गया। तत्पश्चात महिला मंडल के द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया।

महिला मंडल मंत्री सुरभि दुगड़ ने कार्यशाला के बारे में जानकारी दी। मुख्य वक्ता माला छाजेड़ ने दोनों विषयों पर अपने विचार रखे। अध्यक्ष सरिता बेगवानी ने बताया कि हर व्यक्ति चाहता है कि मैं अपने जीवन में सफल बनूँ, इसके लिए अपनी शक्ति को जागृत करना है। हम जैसा सोचते हैं, वैसा ही हमारे अवचेतन मन में फिट हो जाता है, इसलिए हमारे संकल्प हमेशा सकारात्मक होने चाहिए। कायोत्सर्ग, ध्यान साधना द्वारा हम अपने अवचेतन मन को जागृत कर सकते हैं।

कार्यक्रम के अंत में सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी का भी कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम का संचालन कविता बोथरा ने किया। सुरभि दुगड़ ने सभी का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में पूरी महिला मंडल का सहयोग रहा।

आध्यात्मिक अनुष्ठान का आयोजन

भीलवाड़ा।

शासनश्री मुनि हर्षलाल जी, मुनि पारस कुमार जी, मुनि यशवंत कुमार जी के प्रांजल सान्निध्य में नवरात्रि पर्व के शुभारंभ पर आध्यात्मिक अनुष्ठान आयोजित हुआ। नवनिर्वाचित अभातेममं महामंत्री नीतू ओस्तवाल के स्वागत में तेममं द्वारा कार्यक्रम आयोजित हुआ।

शासनश्री मुनि हर्षलाल जी ने राष्ट्रीय महामंत्री को आध्यात्मिक मंगलकामनाएँ दी

एवं संघ-संघपति के प्रति समर्पित होकर कार्य करने की प्रेरणा दी। मुनि पारस कुमार जी ने कहा कि पदासीन व्यक्ति लौकिक कार्यों के साथ लोकोत्तर कार्यों को भी महत्त्व देकर एक नया इतिहास बनाए। मुनि यशवंत जी ने नव निर्वाचित महामंत्री के प्रति मंगलकामना करते हुए कहा कि वक्त कभी भी करवट ले सकता है, इसलिए पद दायित्व निर्वहन के समय सजग, विनम्र होना जरूरी है। आचार्य तुलसी के युग को याद करते हुए आपने कहा कि उन्होंने साधु व श्रावक समाज की हर छोटी प्रतिभा को जाना, प्रोत्साहित, प्रेरित किया और विकास का मंच दिया, तब जाकर यह तेरापंथ संघ आज शिखर पर आरूढ़ है। वर्तमान आचार्य महाश्रमण जी से प्रबंधन के सूत्र सीखकर प्रतिभाओं को उजागर किया जा सकता है।

महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। अभातेममं राष्ट्रीय महामंत्री नीतू ओस्तवाल ने कहा कि कर्मभूमि भीलवाड़ा में साधु-साधवियों की सन्निधि एवं बहनों द्वारा मिले सम्मान-स्नेह की ही फलश्रुति है कि आज वो इस मुकाम पर है। महिला मंडल अध्यक्षा मैना कांटेड ने राष्ट्रीय महामंत्री का स्वागत करते हुए उनके प्रति मंगलकामना एवं बधाई

व्यक्त की। निवर्तमान अध्यक्षा मीना बाबेल ने वर्ष 2021-22 की उपलब्धियों पर अभातेममं द्वारा प्रदत्त सम्मान के बारे में बताया। नव निर्वाचित अभातेममं सदस्य उषा सिसोदिया एवं मनाली चोरड़िया ने भी अपने विचार व्यक्त किए। प्रचार-प्रसार मंत्री नीलम लोढ़ा ने बताया कि नव निर्वाचित राष्ट्रीय महामंत्री एवं अभातेममं सदस्यों के स्वागत-अभिनंदन में टीपीएफ राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल, अणुविभा उपाध्यक्ष निर्मल गोखरू, अध्यक्ष जसराज चोरड़िया, तेयुप मंत्री अशोक बड़ोला, विमला रांका, चंद्रकांता चोरड़िया ने भी अपनी भावनाएँ प्रस्तुत की।

तेममं से विनीता भानावत एवं टीम ने सामूहिक स्वर में गीतिका की प्रस्तुति दी। कन्या मंडल ने एकशन सॉन्ग द्वारा स्वागत गीतिका प्रस्तुत की। मंच संचालन मंत्री अमिता बाबेल ने किया। सम्मान सत्र का संचालन विनीता सुतरिया ने किया। तेममं की ओर से आभार ज्ञापन नीलम लोढ़ा ने किया। कार्यक्रम में श्रावक समाज एवं अभातेममं महामंत्री एवं सदस्यों के परिवारजन की भी उपस्थिति रही। कार्यकारिणी, परामर्शक, संरक्षक एवं मंडल की सभी बहनों ने उत्साह के साथ स्वागत कार्यक्रम को सफल बनाया।

प्रेक्षाध्यान दिवस का आयोजन

उधना।

मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में केंद्रीय संस्था प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देशन में तेरापंथी सभा द्वारा प्रेक्षाध्यान दिवस मनाया गया। मुनिश्री ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी महान ध्यान योगी थे। उन्होंने भगवान महावीर की ध्यान साधना का गहराई से अभ्यास किया। प्राचीन आगम ग्रंथों का भी गहन अध्ययन किया। लगभग 20 वर्ष की ध्यान योग साधना के पश्चात उन्होंने प्रेक्षाध्यान का प्रवर्तन किया। प्रेक्षाध्यान एक संपूर्ण योग प्रशिक्षण प्रविधि है। प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कायोत्सर्ग, प्राणायाम, योगासन, दीर्घ श्वास प्रेक्षा, ज्योति केंद्र प्रेक्षा, अनुप्रेक्षा आदि अनेक अंग हैं।

मुनि अनंत कुमार जी ने कहा कि प्रेक्षाध्यान आत्मदर्शन की प्रक्रिया है। मुनि ज्योतिर्मय कुमार जी ने सुंदर कथा-वार्ता द्वारा कर्तव्य निष्ठा के विकास की प्रेरणा दी। मुनि उदित कुमार जी ने दीर्घ श्वास प्रेक्षा के प्रयोग के साथ ध्यान करवाया।

प्रेक्षा फाउंडेशन के गुजरात राज्य सह-प्रभारी रेणु नाहटा ने प्रेक्षाध्यान प्रविधि से जुड़ने का आह्वान किया। उन्होंने सूरत में संचालित विविध प्रेक्षा सेंटर्स की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा, उधना के प्रेक्षाध्यान प्रभारी जवेरीलाल दुगड़ ने किया। प्रेक्षा प्रशिक्षक रतनलाल आंचलिया ने मंगलभावना करवाई। उधना की प्रेक्षा प्रशिक्षिका बहनों द्वारा प्रेक्षा गीत का संगान किया।

तेयुप द्वारा मानव सेवा कार्य

राजाजीनगर।

स्वर्गीय उत्तमचंद्र भंडारी की पुण्य स्मृति में धर्मपत्नी कमला बाई भंडारी एवं पारिवारिकजन के सहयोग से आश्रम में दैनिक जरूरत की सामग्री प्रदान की गई। तेयुप अध्यक्ष कमलेश गन्ना के निवेदन पर आश्रम वार्डन शारदांबेजी एवं सुंदरमल ने आश्रम की संक्षिप्त जानकारी देते हुए बताया कि आश्रम गत सात वर्षों से गतिमान है, जिसमें तीस वृद्ध एवं नौ बच्चे आश्रित हैं। आश्रम में रह रहे सभी सदस्यों ने परिषद परिवार का धन्यवाद व्यक्त करते हुए आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर तेयुप, राजाजीनगर अध्यक्ष कमलेश गन्ना, राजेश देरासरिया, जयंतिलाल गांधी, अरविंद कोठारी एवं सेवा सारथी के संयोजक मुकेश भंडारी एवं सह-संयोजक विक्रम बोहरा की उपस्थिति रही।

पश्चिम बंगाल आंचलिक श्रावक सम्मेलन का आयोजन

साउथ कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में पश्चिम बंगाल आंचलिक श्रावक सम्मेलन का आयोजन साउथ कोलकाता तेरापंथी सभा द्वारा तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। जिसका मुख्य विषय 'धर्मसंघ और हमारा दायित्व' था। इस अवसर पर पश्चिम बंगाल की २२ सभाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। सम्मेलन में मुख्य अतिथि महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया थे। मुख्य न्यासी सुरेशचंद्र गोयल, पंचमंडल सदस्य भंवरलाल बैद, उपाध्यक्ष नेमचंद्र बैद, महामंत्री विनोद बैद, कोषाध्यक्ष मदन कुमार मरोठी, न्यासी बाबूलाल बोथरा, आंचलिक प्रभारी तेजकरण बोथरा आदि गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि द्रष्टा का हर व्यवहार आम आदमी से भिन्न हो, विशिष्ट हो। श्रावक एक मनुष्य है पर

अन्य मनुष्यों की तुलना में उसका व्यवहार विलक्षण हो यह आवश्यक है। जिनशासन के चार अंग हैं, उसमें एक है—श्रावक। श्रावक वह होता है जो अल्पारंभी व अल्प परिग्रही हो जो श्रद्धावान है, विवेकवान है, क्रियाशील है, कर्तव्य के प्रति जागरूक है, नशामुक्त है, तत्त्वज्ञानी है, स्वाध्यायशील है, दृढ़धर्मी है, सबके हितों की सुरक्षा करता है वह श्रावक समाज के लिए उपयोगी होता है।

मुनिश्री ने कहा कि जिस प्रकार बगीचे की शोभा फूल से होती है, फूल की शोभा बगीचे से होती है उसी प्रकार व्यक्ति की शोभा संघ से होती है और संघ की शोभा व्यक्ति से होती है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। संघ आश्वासन व विश्वास देने वाला है, संघ शीत घर के समान होता है। संघ माता-पिता के समान होता है उस संघ की शरण में आना चाहिए।

बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत

का संगान किया। इस अवसर पर महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने कहा कि व्यक्तिगत, पारिवारिक, व्यापारिक व सामाजिक जीवन को संस्कारमय बनाएँ। यह हमारा दायित्व है। श्रावक निष्ठा पत्र के सात संकल्प प्रत्येक श्रावक को हृदय में अंकित करने चाहिए।

इस अवसर पर अनेक संस्थाओं के पदाधिकारीगण, सदस्य एवं गणमान्यजन उपस्थित थे। स्वागत भाषण साउथ कोलकाता सभा के अध्यक्ष विनोद कुमार चोरड़िया ने किया। आभार ज्ञापन सहमंत्री कमल किशोर कोचर ने किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेमम के मंगलाचरण से हुआ। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने किया। अतिथियों का पचरंगी पट्टी से सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी व सभा के मंत्री कमल सेठिया ने किया।

लक्ष्य की ओर हो ऊँची उड़ान

जोधपुर।

अणुव्रत समिति व तेमम, जोधपुर के संयुक्त तत्वावधान में साध्वी रतिप्रभा जी के निर्देशन में साध्वी मनोजयशा जी व साध्वी पावनयशा जी के सान्निध्य में 'लक्ष्य की ओर हो ऊँची उड़ान-नैतिकता के साथ' विषयक कार्यक्रम का आयोजन पब्लिक पार्क के पीछे स्थित प्रज्ञा निकेतन छात्रावास में आयोजित हुआ।

अणुव्रत समिति सदस्यों द्वारा अणुव्रत गीत द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। महिला मंडल मंत्री पूजा सालेचा ने सभी का स्वागत किया व अणुव्रत अध्यक्ष गोविंदराज पुरोहित के कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी दी। प्रज्ञा निकेतन की अध्यक्ष डॉ० मीना बरड़िया ने साध्वीवृंद व पधारें हुए सभी

अतिथियों व छात्रावास परिवार की ओर से स्वागत किया। प्रज्ञा निकेतन के छात्रों ने भी गीतिका के माध्यम से साध्वीवृंद का भावभीना स्वागत किया।

साध्वी मनोजयशा जी ने कहा कि जीवन हर प्राणी जीता है लेकिन कैसे जीता है यह महत्त्वपूर्ण है। ऐसे छात्र जो अपने जीवन में कठिनाइयों को नजरअंदाज करते हुए स्वयं अपने बल पर समाज के सामने बहुत कुछ करने का जज्बा रखते हैं। लक्ष्य के साथ गति, नेक इरादे, इससे व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को और अधिक ऊँचा उठा सकता है। साध्वी पावनयशा जी ने कहा कि मानव जीवन दुर्लभ है और व्यक्ति अपनी कथनी-करनी के अनुसार फल प्राप्त करता है।

नवनिवृत्त वाईस चांसलर कुसुमलता भंडारी का अभिनंदन

इस अवसर पर अणुव्रती, कन्या रत्न उपाधि से सम्मानित डॉ० कुसुमलता भंडारी का महात्मा गांधी दिव्यांग विश्वविद्यालय की नवमनोनीत, संस्थापक वाईस चांसलर के रूप में नियुक्त होने पर तेरापंथ महिला मंडल व अणुव्रत समिति, जोधपुर की ओर से अणुव्रत टुपट्टा, माला, शॉल साफा, साहित्य से अभिनंदन कर उनके प्रति मंगलकामना की। इस अवसर पर डॉ० कुसुमलता भंडारी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

इस अवसर पर अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे। आभार अणुव्रत समिति सहमंत्री विनोद सुराणा व संचालन मंत्री मितेश जैन ने किया।

जैन विद्या कार्यशाला का दीक्षांत समारोह का आयोजन

उधना।

मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, उधना में नवरात्रि आध्यात्मिक अनुष्ठान का शुभारंभ हुआ। तेरापंथ भवन, सिटीलाइट में साध्वी त्रिशला कुमारी जी, आशीर्वाद पैलेस में साध्वी मधुबाला जी, पर्वत पाटिया में साध्वी हिमश्री जी, बारडोली में साध्वी सोमयशा जी एवं कामरेज में साध्वी सम्यक्प्रभा जी के सान्निध्य में भी नवरात्रि आध्यात्मिक अनुष्ठान का शुभारंभ हुआ।

इस अवसर पर मुनि उदित कुमार जी ने कहा कि कुछ दिन ऐसे होते हैं जिन

दिनों में कोई भी नया कार्य प्रारंभ किया जाए तो उसमें विशेष सफलता प्राप्त होती है। धार्मिक मंत्र-जप के अनुष्ठान के लिए भी कुछ विशेष समय होता है। अनुष्ठान का अर्थ है आत्मा के निकट पहुँचना या आत्मा में स्थित होना। मंत्र-जप के अनुष्ठान में शब्द संरचना का भी विशेष महत्त्व होता है। जो नियमित रूप से निश्चित दिशा में और निश्चित स्थान पर नवरात्रि अनुष्ठान करता है वह आध्यात्मिकता के मार्ग पर आगे बढ़ जाता है।

मुनिश्री के सान्निध्य में संचालित जैन विद्या कार्यशाला का दीक्षांत समारोह

आयोजित किया गया। जिमसे प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय क्रमांकितों सहित सभी उत्तीर्ण प्रतियोगियों को सम्मानित किया गया।

मुनि अनंत कुमार जी एवं मुनि रम्य कुमार जी ने नवरात्रि आध्यात्मिक अनुष्ठान करवाया। अध्यक्ष हेमंत डांगी ने स्वागत वक्तव्य एवं चंद्रेश लोढ़ा ने आभार ज्ञापित किया। दीक्षांत समारोह का संचालन जसवंत डांगी ने किया। जैन विद्या कार्यशाला की परीक्षा में प्रथम हेमंत डांगी, द्वितीय सीमा डांगी, तृतीय प्रियंका विकास चंडालिया एवं फतेहलाल मिश्रीलाल बाबेल रहे।

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

रायपुर।

सरोज देवी ताराचंद्र डागा के पुत्रवधु-पुत्र रीना दीपक डागा के पुत्र का नामकरण संस्कार संस्कारक अनिल दुगड़ व अर्पित गोखरू ने जैन संस्कार विधि द्वारा विधि मंत्रोच्चारण द्वारा संपन्न करवाया।

संस्कारकों व परिजनों के साथ उपस्थित सभी के प्रति आभार तेयुप मंत्री गौरव दुगड़ द्वारा व्यक्त किया गया। आयोजन में तेयुप, रायपुर से वीरेंद्र डागा, निर्मल गांधी, सुशील डागा की उपस्थिति रही।

नूतन गृह प्रवेश

राजराजेश्वरी नगर।

चौथमल किरण देवी बांठिया के सुपुत्र रोहित एकता बांठिया का गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक विकास बांठिया ने नवकार महामंत्र द्वारा एवं विधि-विधान पूर्वक संपन्न करवाया।

तेयुप अध्यक्ष विकास छाजेड़, पूर्व अध्यक्ष सुशील भंसाली एवं जैन संस्कार विधि प्रभारी गौतम नाहटा उपस्थित थे। आभार ज्ञापन प्रभारी गौतम नाहटा ने किया।

पूर्वांचल-कोलकाता।

सरदारशहर निवासी, पूर्वांचल-कोलकाता प्रवासी प्रमोद बोथरा का नूतन गृह प्रवेश संस्कारक सुरेंद्र सेठिया एवं अनूप गंग ने जैन संस्कार विधि से संपूर्ण विधि-विधान द्वारा नमस्कार महामंत्र, मंगल-स्तोत्रों के उच्चारण द्वारा संपादित करवाया।

तेयुप की ओर से कोषाध्यक्ष हर्ष सिरोहिया, संस्कारक सुरेंद्र सेठिया एवं अनूप गंग ने मंगलमय भविष्य की शुभकामनाएँ प्रेषित कर मंगलभावना पत्रक प्रदान किया तथा बोथरा परिवार के प्रति आभार ज्ञापित किया।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर का नवीनीकरण

बैंगलोर।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, राजाजीनगर का नवीनीकरण संस्कारक अमित भंडारी ने विधि-विधान एवं मंगल मंत्रोच्चारण से कार्यक्रम को संपन्न करवाया। अध्यक्ष रजत बैद ने सभी का स्वागत किया तथा कोषाध्यक्ष तरुण पटावरी एवं आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर टीम के प्रति आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम में उपाध्यक्ष आलोक कुंडलिया एवं विवेक मरोठी, मंत्री रोहित कोठारी, कोषाध्यक्ष तरुण पटावरी, सह-संयोजक प्रसन्न धोका आदि अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

तप अनुमोदना कार्यक्रम का आयोजन तिरुपुर।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में शांतिबाई सेठिया, कुंभकोणम के २५ के प्रत्याख्यान का तप अनुमोदना का कार्यक्रम मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र से की। साध्वीश्री जी ने तपस्या के महत्त्व को उजागर किया। तप की आराधना मोक्षमार्ग की आराधना है। जैन साधना पद्धति का महत्त्वपूर्ण अंग है—तपोयाग। यह चित्त शुद्धि और कर्म मुक्ति का शक्तिशाली साधन है। साध्वी मेरुप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका से सबका मन मोह लिया। साध्वी मयंकप्रभा जी ने तप के मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। साध्वी दक्षप्रभा जी ने गीतिका के द्वारा तपस्या के महत्त्व को बताया। कुंभकोणम से पधारें रमेश सेठिया की धर्मपत्नी शांति बाई सेठिया ने २५ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। आपने इससे पहले ४ मासखमण, २२ की तपस्या, १२ बार अटाई की तपस्या, ज्ञान पंचम इत्यादि तपस्या कर रखी हैं।

कार्यक्रम का संचालन साध्वी मेरुप्रभा जी ने किया। सभा अध्यक्ष अनिल आंचलिया ने सबका स्वागत किया। तपस्वी का अभिनंदन सभा अध्यक्ष अनिल आंचलिया, मंत्री मनोज भंसाली और महिला मंडल अध्यक्षा नीतू सिंघवी ने किया।



उपासना

(भाग - एक)

□ आचार्य महाश्रमण □



मित भोजन

मित भोजन का मतलब है अधिक न खाना, भूख से दो ग्रास कम खाना। दो चपाती की भूख में दो के स्थान पर डेढ़ खाना लाभदायक हो सकता है, पर दो की जगह ढाई-तीन खाना बीमारी को निमंत्रण देना है। एक बार उचित मात्रा में भोजन कर लिया जाए, उसके बाद कोई स्वादिष्ट वस्तु भी सामने आए तो मन पर कंट्रोल होना चाहिए। यथासंभव खाने का प्रयास न हो। एक बार अच्छी मात्रा में भोजन होने के बाद तीन-चार घंटे पेट को विश्राम मिलना चाहिए। कई लोग त्याग करने का अच्छा क्रम रखते हैं। दिन में दो घंटे, तीन घंटे, पाँच घंटे—जितना संभव हो, खाने का त्याग कर देते हैं यह एक अच्छी बात है। इससे सहज तपःसाधना सध जाती है। खाने का संयम हो जाता है और स्वास्थ्य की दृष्टि से भी हितकर है। इस प्रसंग में युवाचार्यप्रवर अपना एक संस्मरण सुनाया करते हैं—मैं जब छोटा था, साधुओं के पास जाया करता था। वहाँ एक वृद्ध श्रावक से मिलना हुआ। उनके पास एक छोटी-सी पुस्तिका थी। उस पर लिखा हुआ था—खाते-पीते मोक्ष। मैंने जानकारी की—खाते-पीते मोक्ष कैसे हो सकता है? मुझे बताया गया कि इस पुस्तिका में कई कोष्ठक बने हुए हैं। खाने का एक घंटे का त्याग कर दो, एक बिंदु लगा दो। फिर त्याग करो, दूसरा बिंदु लगा दो। इस प्रकार इस पुस्तिका के सब कोष्ठक भरे जाते हैं। इसका एक ही उद्देश्य है कि त्याग की दिशा में व्यक्ति की अधिक से अधिक गति हो। यह तब संभव हो सकता है जब व्यक्ति का जिह्वा पर संयम हो।

युक्ति से प्रतिबोध

एक युवक था। उसने पर्याप्त मात्रा में भोजन कर लिया। भोजन करके उठा कि मित्र की तरफ से भोजन का निमंत्रण आ गया। युवक ने सोचा—चला जाऊँ। सहज रूप से माल खाने को मिलेंगे। किंतु मन में आया—पिताजी बैठे हैं तो उनका परामर्श भी ले लेना चाहिए। पिता के पास गया और संस्कृत भाषा में अपना अभिप्राय रखते हुए कहा—

**उर्ध्वं गच्छति नोद्गाराः, नोऽधो गच्छन्ति वायवः।
निमंत्रणं समायातं, तातु! ब्रूहि करोमि किम्।।**

पिताश्री! मैंने भोजन तो पर्याप्त मात्रा में कर लिया है। कुछ अधिक ही खा लिया है। स्थिति यह है कि ऊपर से डकार नहीं आ रहा है। नीचे से अधोवायु नहीं हो रही है। किंतु मित्र की ओर से निमंत्रण आ गया है, क्या मैं प्रीतिभोज में सम्मिलित होने चला जाऊँ? पिता ने सोचा—सीधा निषेध करना ठीक नहीं है। इसे युक्ति से समझाना चाहिए। समझाने का भी तरीका होता है। कभी सीधी भाषा में कहकर समझाया जाता है। कभी टेढ़ी भाषा में समझाना होता है। पिता ने भी संस्कृत में ही उत्तर देते हुए कहा—

**भोजनं कुरु दुबुद्धं! मा प्राणेषु दयां कुरु।
परान्नं दुर्लभं लोके, शरीराणि पुनः पुनः।।**

अरे मूर्ख! इसमें पूछने की क्या बात है? खाओ, खूब खाओ। शरीर तो पुनः मिल जाएगा पर मुफ्त का माल खाने को कब मिलेगा? पिता के इस कथन से लड़का समझ गया कि ज्यादा खाऊँगा तो शरीर को खतरा होगा। उसने प्रीतिभोज में जाने का विचार बदल दिया।

सामान्यतः खाना पूरा हो जाए तो उसके बाद चाहे मनोज्ञ पदार्थ भी सामने क्यों न आ जाए, खाने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। खाने में जल्दबाजी करना भी अनुचित है। जो धीरे-धीरे चबा-चबाकर खाता है उसके लिए खाद्य-संयम काफ़ी आसान हो जाता है। खाते समय व्यक्ति का दिमाग भी शांत होना चाहिए। कहा गया है—ईर्ष्या, भय, क्रोध, लोभ आदि स्थितियों में किए गए आहार का सम्यक् परिपाक नहीं होता है। जठराग्नि मंद हो जाती है। जैन तपोविधि में आहार-संयम के कई प्रयोग विहित हैं—अनशन-उपवास, ऊनोदरी-नवकारसी, प्रहर आदि। एक अवस्था आ जाने के बाद व्यक्ति सायंकाल का भोजन कम कर दे या बिलकुल छोड़ दे तो शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों दृष्टियों से उचित हो सकता है।

एक भाई ने युवाचार्यप्रवर से पूछा—रात्रि में भोजन नहीं करता हूँ पर कभी-कभी कार्यवश बाहर चला जाता हूँ तो आने में विलंब हो जाता है। रात में भोजन करने की स्थिति आ जाती है। मुझे क्या करना चाहिए?

युवाचार्यप्रवर ने कहा—आपकी जो उम्र है उसमें दो समय का भोजन पर्याप्त है—प्रातःकाल का और मध्याह्न का। सायंकाल का भोजन न करना आपके स्वास्थ्य के लिए ज्यादा हितकर हो सकता है। उन्होंने बात पर ध्यान दिया और दो बार के भोजन से ही काम चलाना शुरू कर दिया।

एकासन में भी विवेक होना आवश्यक है। ऐसा न हो तीन-चार टाइम का खाना एक बार में ही टूँस-टूँसकर खा लिया जाए। प्रातःकाल नाश्ते में भी मेरे विचार से अधिक नहीं खाना चाहिए। उपवास के पारणे में भी कई लोग अधिक खा लेते हैं। पारणे में अधिक खाना नुकसानप्रद है। गुरुदेव तुलसी अपने जीवन का एक संस्मरण सुनाया करते थे—वे जब छोटे थे तो उपवास के पारणे में कई द्रव्य ले लेते थे। उससे पारणे के बाद बेचैनी हो जाती। पैरों में भारीपन का अनुभव होता। एक बार उन्होंने एक अनुभवी श्रावक से इसका समाधान चाहा। उसने परामर्श दिया कि पारणे में आप थोड़े से दूध के अतिरिक्त कुछ न लिया करें। उस विधि से पारणा शुरू किया तो कोई कठिनाई उपस्थित नहीं हुई।

पारणे में संयम बहुत आवश्यक है। व्यक्ति अटाई करे, पंद्रह का तप करे या मासखमण तप करे और पारणे तथा पारणे के कुछ दिन तक खाने में संयम न रखे तो तपस्या बदनाम भी हो सकती है।

अपान की शुद्धि

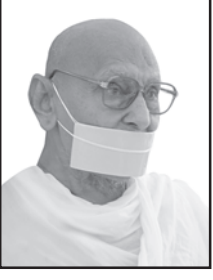
परिमित भोजन की एक महत्वपूर्ण कसौटी यह है—पाचन तंत्र और उत्सर्जन तंत्र स्वस्थ है या नहीं? परिमित भोजन की दृष्टि से दोनों तंत्रों की स्वस्थता बहुत महत्वपूर्ण है। पाचन तंत्र ठीक है तो जो खाया जाएगा उसका सम्यक् पाचन होगा। यदि पाचन ठीक होगा तो मनुष्य बहुत सारी शारीरिक, मानसिक और भावात्मक व्याधियों से मुक्त रहेगा। पाचनतंत्र का संबंध है उत्सर्जन तंत्र से। यदि उत्सर्जन तंत्र ठीक है तो शरीर हलका रहेगा, मन और इंद्रियाँ प्रसन्न रहेंगी, चिंतन स्वस्थ होगा।

हित भोजन

हित भोजन अर्थात् हितकर भोजन। परिमित भोजन में भी वैसा खाना जो हितकर हो। जो खाना स्वास्थ्य के लिए अहितकर हो उससे बचना चाहिए। उत्तराध्ययन सूत्र में एक प्रसंग आता है कि किस प्रकार अहितकर पदार्थ को खाने से राजा को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा। एक राजा को आम खाने का बड़ा शौक था। उसे खाने के लिए प्रतिदिन आम चाहिए। आम भी अतिमात्रा में खा लेता। 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' अति को सर्वत्र त्याज्य माना गया है। अधिक मात्रा में आम के सेवन से राजा का शरीर रोगाक्रांत हो गया। वैद्य को बुलाया गया। अच्छा-अनुभवी वैद्य था। नाड़ी देखकर कहा—राजन्! मैं आपको दवा दूँगा, आप ठीक हो जाएँगे। फिर मेरे द्वारा बताया गए परहेज के अनुसार चलेंगे तो यह बीमारी वापस कभी नहीं होगी। एक पुड़िया दपी और साथ में परहेज बता दिया कि आम जीवन में कभी भी मत खाना। राजा ने वैद्य की बात को स्वीकार किया। दवा की एक पुड़िया ली कि बीमारी खत्म हो गई। राजा ने निर्णय कर लिया कि अब जिंदगी में कभी भी आम नहीं खाऊँगा। आदेश निकाल दिया गया—शहर में कहीं कोई आम का पेड़ हो तो उसे नष्ट कर दिया जाए ताकि मेरे पास कोई आम आ ही न सके।

एक बार की बात है, राजा और मंत्री घूमने गए। शहर की सीमा से बहुत आगे चले गए। वहाँ एक आम का बगीचा था। आम की सुगंध राजा को दूर से ही आकृष्ट करने लगी। राजा ने मंत्री से कहा—मंत्री! बहुत थक चुका हूँ। कहीं विश्राम करना पड़ेगा। पास में यह बगीचा है। इसमें चलें। मंत्री ने कहा—महाराज! बगीचा तो है पर आम का है। हमारा यहाँ ठहरना उचित नहीं है। आगे कहीं विश्राम करेंगे। राजा बोला—मंत्री! गहरा थक गया हूँ। एक बार तो विश्राम यहीं करना पड़ेगा। मंत्री ने बहुत समझाया पर आखिर मालिक पर मालिक कौन? राजा और मंत्री आम के बगीचे में पहुँचे। एक आम के पेड़ के नीचे राजा विश्राम करने लगा। छायादार पेड़। ठंडी हवा। हवा के एक झोंके से आम टूटकर राजा की गोद में आ गिरा। आम के प्रति राजा का पुराना प्रेम उद्बुद्ध हो गया। राजा ने आम को हाथ में लिया। घुमा-घुमाकर राजा उसे देखने लगा। मंत्री निवेदन की भाषा में बोला—महाराज! मुझ पर कृपा करें। इस आम को फेंक दें। राजा बोला—मंत्री! तुम तो बड़े बुजुर्ग हो। आम को देखने में क्या दिक्कत है? वैद्य ने तो आम खाने का निषेध किया है। देखने में कौन सा अपराध हो गया? मैं तो देख ही रहा हूँ। खा तो नहीं रहा हूँ। आम को देखते-देखते राजा उसे सूँघने लगा। मंत्री ने पुनः निवेदन किया—महाराज! कृपा कर आम को दूर रखें। राजा ने फिर मंत्री की बात को काटते हुए कहा—मंत्री! आम को सूँघने में क्या दिक्कत है? सूँघते-सूँघते राजा ने उसे होंठों से लगाया और थोड़ा सा रस चूस भी लिया। मंत्री ने साहस किया और राजा के हाथ से छीनकर आम को दूर फेंक दिया। राजा की स्थिति बिगड़ने लगी। मंत्री ने तत्काल राजा को महल पहुँचाया। उसी पुरानी बीमारी ने पुनः आक्रमण कर दिया। उसी वैद्य को पुनः बुलाया गया। वैद्य आया। उसने कहा—आपने कहीं न कहीं अतिक्रमण किया है, आम खाया है, अन्यथा मेरी दवाई लेने के बाद बीमारी पुनः हो नहीं सकती। राजा बोला—वैद्यजी! ज्यादा तो नहीं खाया, मैंने तो थोड़ा-सा चूसा था। वैद्य बोला—महाराज! उसी ने गड़बड़ की है। अब मेरे पास कोई इलाज नहीं है। वैद्य के देखते-देखते राजा के प्राण-परखेरू उड़ गए। यह है खाने का असंयम। राजा यदि खाने का संयम रख पाता तो संभवतः अकाल मृत्यु टल जाती, किंतु व्यक्ति को जिस वस्तु का स्वाद लग जाता है, उसे छोड़ना असंभव तो नहीं कठिन प्रायः अवश्य होता है।

कुछ मनोवैज्ञानिकों ने अपराधी प्रकृति के बच्चों का विश्लेषण किया। जाँच से यह तथ्य सामने आया कि वे बच्चे कृत्रिम रंग वाले और अति परिष्कृत पदार्थ खाते थे। आजकल बाजार में रंग-बिरंगी मिठाइयों के ढेर लगे रहते हैं। वे देखने में बहुत अच्छी लगती हैं, खाने में भी स्वादिष्ट लगती हैं पर उनका परिणाम अच्छा नहीं होता। जो डिब्बा बंद अति-परिष्कृत पदार्थ आते हैं उनका प्रभाव भी नुकसानदेह होता है। मनोवैज्ञानिकों ने निष्कर्ष निकाला—बच्चों के अपराधी होने का कारण है अति परिष्कृत और कृत्रिम रंगयुक्त भोजन। मनोवैज्ञानिक ने उनके आहार को बदला, कृत्रिम रंगयुक्त भोजन देना बंद कर दिया। कुछ ही दिनों में उनकी उड़ड़ता समाप्त हो गई। बच्चे विनीत और शांत बन गए। अपराध करने का मनोभाव समाप्तप्रायः हो गया। वैज्ञानिकों ने इस प्रकार के सैकड़ों-सैकड़ों प्रयोग किए हैं, मनुष्यों पर भी और पशुओं पर भी। यह प्रमाणित हो गया है—जितने कृत्रिम रंग से बने पदार्थ हैं, वे देखने में आकर्षक और मनमोहक भले हो, स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं।



संबोधि

□ आचार्य महाप्रज्ञ □

बंध-मोक्षवाद

ज्ञेय-हेय-उपादेय

भगवान् प्राह

(२८) विशुद्धयै कृतदोषाणां, प्रायश्चित्तं विधीयते।
आलोचनं भवेत्तेषां, गुरोः पुरः प्रकाशनम्॥

किए हुए दोषों की शुद्धि के लिए जो क्रिया-अनुष्ठान किया जाता है, उसे प्रायश्चित्त कहते हैं। गुरु के समक्ष अपने दोषों का निवेदन करना आलोचना है।

(२९) प्रमादादशुभं योगं, गतस्य च शुभं प्रति।
क्रमणं जायते तत्तु, प्रतिक्रमणमुच्यते॥

प्रमादवश अशुभ योग में जाने पर पुनः शुभ योग में लौट आना प्रतिक्रमण कहलाता है।

(३०) अभ्युत्थानं नमस्कारो, भक्तिः शुश्रूषणं गुरोः।
ज्ञानादीनां विनयनं, विनयः परिकथ्यते॥

गुरु आदि बड़ों के आने पर खड़ा होना, नमस्कार करना, भक्ति-शुश्रूषा करना और ज्ञान आदि का बहुमान करना विनय है।

(३१) आचार्यशैक्षरुग्णानां, संघस्य च गणस्य च।
आसेवनं यथास्थाम, वैयावृत्त्यमुदाहृतम्॥

आचार्य, शैक्ष-नव दीक्षित, रुग्ण, गण और संघ की यथाशक्ति सेवा करना वैयावृत्त्य है।

(३२) वाचना पृच्छना चैव, तथैव परिवर्तना।
अनुप्रेक्षा धर्मकथा, स्वाध्यायः पञ्चधा भवेत्॥

स्वाध्याय पाँच प्रकार का होता है—(१) वाचना-पढ़ना। (२) पृच्छना-प्रश्न पूछना। (३) परिवर्तना-कंठस्थ किए हुए ज्ञान की पुनरावृत्ति करना। (४) अनुप्रेक्षा-अर्थ-चिंतन करना। (५) धर्मकथा-प्रवचन करना।

स्वाध्याय और ध्यान परमात्म-प्रकाशन के अनन्यतम अंग हैं। ध्यान जैसे योग का एक अंग है वैसे स्वाध्याय भी। स्वाध्याय ध्यान का प्रवेश-द्वार है। साधक स्वाध्याय से स्वयं की यथार्थता स्वीकार कर लेता है, तब ध्यान में प्रवेश के योग्य हो जाता है। जब तक स्वयं के रूप की स्वीकृति नहीं होती और न यथार्थ बोध होता है तब उसका परमात्मा की दिशा में दौड़ना सार्थक नहीं होता। इसलिए स्वाध्याय को सबने स्वीकृत किया है। कहा है—

‘स्वाध्यायात् ध्यानमध्यास्तां, ध्यानात्स्वाध्यायमामनेत्।
स्वाध्याय - ध्यानयोगेन, परमात्मा प्रकाशते॥’

— योगी स्वाध्याय से विरत हो जाने पर ध्यान करे और ध्यान से विरत हो जाने पर स्वाध्याय का अवलंबन ले। स्वाध्याय और ध्यान की संपदा से परमात्मा प्रकाशित होता है।

स्वाध्याय के जिस भाव से आज हम परिचित हैं, संभवतः आगमकालीन परंपरा से पूर्व वैसा भाव नहीं था। आगमों की रचना और उनके स्थिरीकरण के समय स्वाध्याय का नया अर्थ प्रचलित हो गया। किंतु इसके साथ-साथ मूल हार्द हाथ से छूट गया। अब स्वाध्याय की शास्त्र-ग्रंथ पठन-पाठन की परंपरा तो रही है किंतु जहाँ जीवन परिवर्तन का प्रश्न था, उसमें अंतर नहीं आया। व्यक्ति शास्त्र-स्वाध्याय कर स्वयं में एक तृप्ति अनुभव करने लगा कि मैंने दैनंदिन कार्य का निर्वाह कर लिया। लेकिन स्वाध्याय तप की भावना पूर्ण नहीं हुई। उससे कोई ताप नहीं पहुँचा। स्वाध्याय तप है, ताप है, तो निःसंदेह ताप से कर्मों को पिघलना चाहिए। कालांतर में स्वाध्याय का रूप और भी शिथिल होता चला गया। आगम-मौलिक ग्रंथों का वाचन छूटकर इधर-उधर की चीजें कंठस्थ कर उनके स्मरण को भी स्वाध्याय के अंतर्गत स्थान दे दिया।

शास्त्रों का अध्ययन-अध्यापन सार्थक नहीं है। ऐसा प्रतिपाद्य नहीं है। उनकी उपयोगिता है और वह सिर्फ इतना ही है कि आप उनसे प्रेरणा प्राप्त कर स्वयं अनुभव की दिशा में पद-विन्यास करें। सिर्फ जाने-माने नहीं किंतु निदिध्यासन करें। इस सदी के पश्चिम के महान् साधक ‘जार्ज गुरजिएफ’ ने एक जगह जान-बूझकर कहा है—‘सबके भीतर आत्मा नहीं है। जो आत्मा को पैदा कर ले, उसी के भीतर आत्मा है। जिन लोगों ने समझाया, सबके भीतर आत्मा है, उन लोगों ने जगत् की बड़ी हानि की है।’ मनुष्य ने मान लिया कि ‘मैं आत्मा हूँ’ अब उसे प्रगट करने का प्रश्न ही समाप्त हो जाता है। जब तक प्रत्यक्ष नहीं जानो तब तक सिर्फ इतना ही कहो कि—मानता हूँ, जानता नहीं हूँ। जिससे स्वयं के अज्ञान की भी स्मृति बराबर बनी रहे और संभवतः जानने के लिए चरण उद्यत हो जाएँ।’ आचार्य कुंदकुंद ने लिखा है—‘शास्त्र ज्ञान नहीं है, क्योंकि वे कुछ जानते नहीं हैं। इसलिए ज्ञान अन्य है और शास्त्र अन्य हैं।’ शास्त्र सिर्फ संकेत है, उन सत्यद्रष्टा ऋषियों के दर्शन का। वह हमारा दर्शन नहीं है।

स्वाध्याय के पाँच प्रकार हैं—(१) वाचना (पढ़ना), (२) पृच्छना, (३) परिवर्तना (याद किए हुए पाठ को दोहराना), (४) अनुप्रेक्षा (चिंतन), (५) धर्मकथा।

शिष्य ने पूछा—भंते! स्वाध्याय का फल क्या है?

गुरु ने कहा— स्वाध्याय से ज्ञानावरण कर्म क्षीण होता है। उससे अनेक लाभ संपन्न होते हैं। स्वाध्याय का पहला लाभ है—

हम कुछ समय तक बाह्य दुनिया से अलग-थलग हो जाते हैं। मन को कुछ क्षणों के लिए उसमें उलझा देते हैं ताकि वह अपनी पुरानी स्मृतियों का ताना-बाना न बुने। यह अस्थायी चिकित्सा है, स्थायी नहीं। इसमें व्यक्ति पूर्णतया स्मृतियों, कल्पनाओं तथा संवेदनाओं से मुक्त नहीं होता।

स्वाध्याय का दूसरा लाभ है—

वाचना, पृच्छना, परिवर्तना आदि से व्यक्ति बाह्य जानकारियाँ अधिक संगृहीत कर लेता है। उसके जानकारी का कोश बहुत अधिक बढ़ जाता है। जो ज्ञान नहीं होने वाला था वह हो जाता है। लेकिन इसका खतरा यह होता है कि व्यक्ति स्वयं में रिक्त होते हुए भी अपने को भरा हुआ समझने लगता है।

(क्रमशः)

अवबोध

□ मंत्री मुनि सुमेरुमल ‘लाडनू’ □

कर्म बोध

बंध व विविध

प्रश्न १७ : सात कर्मों का बंध प्रतिसमय माना है, क्या सात कर्मों की सभी उत्तर प्रकृतियों का बंध भी समय-समय होता है?

उत्तर : सभी उत्तर प्रकृतियों का बंध एक साथ नहीं होता। शुभ प्रवृत्ति से जिस समय शुभ कर्म प्रकृतियों का बंध होता है, उस समय प्रवृत्तिजन्य अशुभ कर्म प्रकृति का बंध नहीं होता। ऐसे ही जब त्रस दशक का बंध होता है, तब स्थावर दशक का बंध नहीं होता।

प्रश्न १८ : क्या ऐसी भी कोई कर्म प्रकृति है, जिसका बंध हुए बिना अनंत काल बीत गया?

उत्तर : तीर्थंकर नाम, आहारक नाम कर्म आदि कुछ ऐसी प्रकृतियाँ हैं, जिन्हें बाँधे बिना अनंतकाल बीत चुका और आगे व्यतीत हो सकता है। इन प्रकृतियों को अभी कभी नहीं बाँधता। सम्यक्त्वी जीवों में भी कोई-कोई जीव के ही उपरोक्त प्रकृतियों का बंध होता है।

प्रश्न १९ : तीर्थंकर धर्मोद्योत के मुख्य धुरी होते हैं। उनकी मात्र एक गति मोक्ष की होती है, तदपि

उसकी इच्छा क्यों नहीं करनी चाहिए?

उत्तर : तीर्थंकर तीर्थंकर-नाम की प्रकृति के उदय से बनते हैं। किसी भी कर्मजन्य अवस्था की अभिलाषा नहीं की जा सकती। कर्म स्वयं बंधन है, वह तीर्थंकर नाम कर्म ही क्यों न हो, उसकी इच्छा कैसे की जा सकती है।

प्रश्न २० : क्या चौदहवें गुणस्थान में जीव कर्ममुक्त हो जाता है?

उत्तर : चौदहवें गुणस्थान में जीव सकर्मा रहता है। वहाँ पूर्ण संवर की अवस्था है। चौदहवें गुणस्थान को छोड़ना, चार अघात्य कर्म को क्षीण करना व सिद्ध होना—ये तीनों कार्य युगपत् घटित होते हैं।

प्रश्न २१ : क्या शुभ-अशुभ कर्म का बंध युगपत् होता है?

उत्तर : शुभ प्रवृत्ति के समय अशुभ व अशुभ प्रवृत्ति के समय शुभ कर्म का बंध नहीं होता। एक समय में एक का ही बंध होता है। यह योग से संबंधित है। कषाय, प्रमाद, अव्रत आदि से समय-समय पर अशुभ कर्म बंधता है, इस दृष्टि से शुभ-अशुभ दोनों कर्म साथ में बंध सकते हैं।

(क्रमशः)



साध्वी पावनप्रज्ञा जी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

पाई प्रभु री कीरपा भारी

● साध्वी उदितयशा ● साध्वी संगीतप्रभा ●

साध्वी पावनप्रज्ञा जी रो पावन अनशन ओ मनहारी।
सौभागी हा बड़भागी हा, पाई प्रभु री कीरपा भारी।।
साध्वी पावन----

आ सहज सरल जीवनशैली, ऋजुता री स्पष्ट निशानी है।
दिन-दिन पुण्याई बढ़ी चढ़ी, गुरु दृष्टि वर कल्याणी है।
वाह-वाह जीती अंतिम बाजी, ओ विरुद बण्यो विस्मयकारी।।
साध्वी पावन----

चढ़तों परिणामां स्यूं ओढ़ी संयम चादर गुरुवर कर स्यूं।
ज्यूं की त्यूं धर दीनी उजली, उजली राखी निज दृढ़ प्रणस्यूं।
जसवल री, माटी नाज करै, बण्यो अणशन ओ जयकारी।।

उपकारी ओ भैक्षवशासन, उपकारां ने चेतें कीज्यो।
सक्षम समर्थ गुरु महाश्रमण री सेवा कर लावो लीज्यो।
ऊपर जाकर मत विसराज्यो, पाई जो गुरु री रीझवारी।।

साध्वीप्रमुखा साध्वीवर्या रो साज शुभंकर सुखकारी।
हां मुख्य मुनि री प्रबल प्रेरणा स्यूं खिलगी संयम क्यारी।।

लय : तुलसी तुलसी---

थे शुभ कदम बढ़ायो

● साध्वी ऋद्धिप्रभा ●

अलबेलो दृश्य दिखायो मनभायो ईण नंदनवन में।
मनभायो ईण नंदनवन में, चमके श्री भिक्षु गणवन में।।

अणसनरी पुरी करदी आस, थे आतम रे बलस्युं।
तन री व्याधि ने देदुं मात, आ ठाणी थे मन में।।

प्रभु पर चरणा में अर्पित कर, जीवन रा हर एक पल नें।
पावो किरपां रा मीठा फल, गुरुवर री चरण शरण में।।

भावां री श्रेणी चढ़ती देख, थे शुभ कदम बढ़ायो।
रह्या अचभित देखण घर, तव दीक्षा रा क्षण नें।।

आलयण ले श्री गुरुमुख स्यूं, अंतस री करी सफाई।
कृतज्ञता स्यूं जुड़ता हाथ, भक्ति अनुरक्ति स्पंदन में।।

समता स्यूं जीतनी है बाजी, दृढ़मन लक्ष्य वणायो।
आत्मा भिन्न शरीर भिन्न है, पावां पावन उदाहरण में।।

घन-घन घन-घन महिमा, पावनप्रज्ञाजी री गावां।
भावां शुभभावना अनुमोदना, म्हारे कण-कण में।।

लय : असली सुख पासी----

अहम्

● नियोजिका समणी अमलप्रज्ञा ●

समणी पावनप्रज्ञा जी ने लगभग २७ वर्ष पूर्व समण श्रेणी में दीक्षा ग्रहण की। साधना के प्रति आपका रुझान सदा गतिमान रहा। हमने देखा आप सुबह ३-४ बजे उठ जाती। शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से आप निरंतर आसन-प्राणायाम करती तो आध्यात्मिकता के लिए ध्यान-जप-आगम स्वाध्याय का क्रम भी सदा चलता। अस्वस्थता में भी आपको हमने प्रसन्नचित्त देखा। समय-समय पर शारीरिक वेदना ने आपको घेरा पर आपने समता के साथ उसे सहन किया। आपका मनोबल गजब है। हर परिस्थिति में सम बने रहना, सिखना हो तो आप साक्षात् उदाहरण हैं। आपमें बहुत सारी विशेषताएँ हैं। आप व्यवहार कुशल हैं, धीरे बोलना और मीठा बोलना आपका विशेष गुण है। हर कार्य को आप बड़े तरीके, ढंग से संपादित करती। आपकी स्वच्छता हम लोगों के लिए सिखने लायक है। आपकी हमेशा यही भावना बनी रहती कि मैं संयम रत्न को ग्रहण करूँ एवं संलेखना संथारा के द्वारा अपनी भव नौका को पार करूँ।

गुरुदेवश्री ने आपकी भावना को समझा, समझा ही नहीं अपितु उसे साकार रूप दे दिया। अब आप साध्वी पावनप्रज्ञा जी बन गईं। आपके दोनों मनोरथ पूर्ण हो गए। आपने अपने नाम को सार्थक कर दिया। आपकी आत्मा उत्तरोत्तर आध्यात्मिक विकास करे, मंगलकामना।

साध्वी पावनप्रज्ञा जी ने अनशन कर करी कमाई

● डॉ० समणी मानसप्रज्ञा ●

साध्वी पावनप्रज्ञाजी ने अनशन कर करी कमाई।
स्वर्णिम बेला आई।
हृद हिम्मत दिखलाई।।

गुरु मुख से पचखा संथारा जागी तव पुण्याई।
साध्वीप्रमुखा साध्वीवर्या देवै आज बधाई।
प्रबल मनोबल संथारा कर गण सौरभ महकाई।।
जसवल और टापरा की नव कीरत खूब फैलाई।
महानिर्जरा करके तुमने आत्मा को चमकाई।
असह्य बीमारी में भी तुमने समता खूब दिखाई।।
अरहंते सिद्धे साहू से अंतर प्रीत लगाई।
नव इतिहास रचा तुमने समणी गण शान बढ़ाई।
आत्मा भिन्न शरीर भिन्न की समझी है गहराई।।

लय : संयममय----

जीवन धन्य बनाया

● समणी सत्यप्रज्ञा ●

जीवन धन्य बनाया।
सति पावन ने श्री चरणों में अपना भाग्य सजाया।।

आना-जाना नियम नियति का कोई नहीं बच पाए।
यश भेरी से इस भूतल को विरला ही गुंजाए।
गुरु चरणों में गुरु ईगित आराधन प्राण बनाया।।
जीवन धन्य बनाया।।

समता, क्षमता, सहज स्वच्छता ताना-बाना तेरा।
जाप-ध्यान स्वाध्याय योग से होता सदा सवेरा।
पूर्ण मनोरथ करके सारे गण गौरव महकाया।।
जिनशासन भैक्षव गण पाया महाश्रमण का साया।
साध्वीप्रमुखा, साध्वीवर्या ने हर पल सहलाया।
पावन जीवन पुष्प खिला कर नव इतिहास रचाया।।

लय : संयममय जीवन----

अहम्

● डॉ० समणी मंजुलप्रज्ञा ●

देह त्याग की बेला में ममत्व बुद्धि की डिग्री कितनी कम हुई है? प्रतिशोध की गोंठें शिथिल हुई या नहीं? उस समय मन में धर्म भावना रहती है या नहीं? आँखें पथराने की घड़ियों में आत्मा कितनी शांति और समता रख सकती है? इसी को ज्ञानियों ने समाधि मरण की प्रलंब कसौटी का पैमाना बताया है। समाधि मृत्यु का इच्छुक न मौत की आकांक्षा करता है न जीवन के प्रति आसक्ति रखता है। मैंने देखा साध्वी पावनप्रज्ञा जी की अंतिम समय में अनासक्ति गजब की थी।

साधना का अंतिम पड़ाव है—संथारा। यह वह महापथ है जहाँ आसक्ति छूट जाती है, आत्मपथ है जिसमें कषायों का तेज घट जाता है और सत्य साकार हो उठता है। यह वह उन्नत मार्ग है, जिस मार्ग पर बढ़ते हुए मौत को आह्वान किया जाता है अर्थात् निर्भयता के साथ लक्ष्य पर पहुँचकर ही साधक दम लेता है। साध्वी पावनप्रज्ञा जी तेरापंथ धर्मसंघ की आत्मार्थी साध्वी थीं। समता, समर्पण, सहनशीलता जैसे अंगरक्षकों ने सदैव साध्वी पावनप्रज्ञा जी की भावना को उन्नत बनाए रखा।

शारीरिक अस्वस्थता के बावजूद भी मनोबल एवं भावनात्मक स्तर निरंतर वृद्धि को प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त जीवन के अंतिम पड़ाव में सजगता के साथ जीवन पर्यन्त खाने का त्याग कर/संथारा कर गण के गौरव को बढ़ाया है।

आपकी संघनिष्ठा, गुरु निष्ठा सदैव प्रेरणादायी रही है। मजबूत आत्मबल, मनोबल एवं संकल्पबल से ही आपने वीरों का पथ स्वीकार किया है और आपने हिम्मत कर तीसरा मनोरथ अंगीकार किया जिसे देखकर सात्त्विक आह्लाद की अनुभूति हुई। धन्य है ऐसी स्थिति में इतना साहस कर वीर मृत्यु के पथ पर अपने कदम बढ़ाए हैं। और अंत में—

**जीना है मौत को हथेली में रखकर।
और मरना है मौत को सुधार कर।।**

‘Mind Over Matter’ - Samani Pavan Pragya ji

● Samani Rohini Pragya ●

Samani Pavan Pragya ji after being Sadhvi Pavan Pragya ji and by observing her most cherished wish of fasting unto death finally travelled to her heavenly abode. She was an integral part of Saman order since last 27 years. She was a good singer, counselor in religious sense and a devotee disciple of H.H Acharya's of Jain Shevatamber Terapanth order.

Last four years have been very challenging time in her life from the health point of view. Her decision to overcome matter (body) by mind was extraordinary. No matter what, she did her daily chant practices, sound practices, mindful practices, and many others without the burden of sickness.

In these years she was in great rhythm, peace, balance, and awareness. Moments spent with her were spiritually empowering and enlightening. Her younger sister Samani Akshay Pragya ji and niece Samani Pranav Pragya ji were untiringly present in her service and support. Their presence made Samani Pavan Pragya ji's journey smooth. However, Samani Pavan Pragya ji by herself was strong and courageous in her every decision. She has set an example of peaceful living and dying. We members of Saman order will miss her and will try to follow the lesson she has taught us by her life and legacy. May the soul rest in peace.

**Life full of awakening,
Breath retheme calming,
Forgiveness seeking
Departure inspiring**

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट-२०२३ जिला स्तरीय स्कूल प्रतियोगिता का आयोजन

चेन्नई।

तेरापंथ जैन विद्यालय, साहूकारपेट, चेन्नई में साध्वी लावण्यश्री जी से मंगलपाठ श्रवण करने के पश्चात स्कूल लेवल के विजेता बच्चों का रजिस्ट्रेशन कर प्रतियोगिताओं का आरंभ किया। यह प्रतियोगिताएँ स्कूल के पाँचवीं कक्षा से आठवीं कक्षा के एक ग्रुप में ६ प्रतियोगिताएँ, इसी प्रकार नवीन से लेकर १२वीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए ६ प्रतियोगिताओं के रूप में रखी गई।

चित्रकला प्रतियोगिता, गीत गायन समूह एवं एकल प्रतियोगिता, कविता लेखन, निबंध लेखन एवं भाषण प्रतियोगिता इस प्रकार सारी प्रतियोगिताओं के लिए विविध निर्णायकों द्वारा जिला स्तरीय विजेताओं के निर्णायक की भूमिका गौतम

सेठिया, निर्मल सेठिया, सुनील बाफना, सिद्धांत बोहरा, मनीषा चोरड़िया, रेखा पीचा, रेखा मरलेचा, प्रमिला बोथरा, मिलन चोपड़ा, डॉ० संतोष नाहर, डिंपल मूथा ने अदा की।

द्वितीय चरण में अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट, चेन्नई जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं के प्रायोजक विजयराज पुष्पा कटारिया द्वारा बच्चों को अपने माता-पिता, अभिभावकों एवं प्रशिक्षकों का सम्मान एवं कहना मानने पर अपने वक्तव्य में जोर दिया। सभी निर्णायकों का सम्मान अणुव्रत समिति अध्यक्ष ललित आंचलिया, मंत्री स्वरूपचंद दांती, प्रायोजक विजयराज पुष्पा कटारिया द्वारा किया गया। अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट २०२३ की राष्ट्रीय साउथ जोन प्रभारी सुभद्रा लुणावत ने चेन्नई

जिला के ३६ स्कूलों द्वारा किए गए प्रतिभा के प्रदर्शन की प्रशंसा की। कुशल बांठिया तमिलनाडु राज्य प्रभारी एसीसी-२३ के साथ अणुव्रत समिति के प्रदीप बाफना, अनिल बोथरा, रोशन बोथरा के साथ पदाधिकारियों एवं अनेक सदस्यों का प्रतियोगिताओं के संचालन में पूर्ण श्रम नियोजित हुआ। टीपीएफ हुनर राष्ट्रीय संयोजक अनिल लुणावत द्वारा प्रतियोगिताओं में माइक सिस्टम का सहयोग प्राप्त हुआ। तेरापंथ एजुकेशनल एंड मेडिकल ट्रस्ट द्वारा प्रतियोगिताओं में तेरापंथ जैन विद्यालय साहूकारपेट स्कूल प्रांगण उपलब्ध कराया गया। कार्यक्रम का संचालन सुभद्रा लुणावत द्वारा किया गया। स्कूल स्तरीय सभी विजेताओं एवं प्रशिक्षकों का भी सम्मान किया गया।

साध्वी पावनप्रज्ञा पवन वेग से गतिमान बनी

● समणी निर्मलप्रज्ञा ●

संयम की साधना का सार है समाधि में रहना। अनंत काल की पुण्याई से चारित्र की उपलब्धि होती है। जीवन की सफलता का सबसे बड़ा सूत्र है—अंतर्दर्शन।

मुमुक्षु पूज्या ने आचार्यश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महापद्मजी के सान्निध्य में समणी जीवन अंगीकार किया। आचार्यश्री महाश्रमणजी की छत्रछाया में साध्वी पावनप्रज्ञा बनी।

जिणवयणे अणुस्ता, जिणवयणं जे करेति भावेण।

अमला असंकलिद्धा, ते होंति परित्तसंसारि।।

इस आगमवाणी का सहारा लेकर साध्वी पावनप्रज्ञा ने अनशन स्वीकार किया। अनशन की पावन बेला में आत्मा भिन्न शरीर भिन्न की अनुभूति बनी रहे एवं भावों की विशुद्धि के साथ-साथ ऊँचे परिणाम की ओर वर्धमान रहे। आचार्यश्री महाश्रमणजी की यह अमृतवाणी उनके लिए सुरक्षा कवच बन गई। आचार्यश्री के शांति संप्रेषण से साध्वी पावनप्रज्ञा ने तेजस्विता को प्राप्त किया।

समता, सहिष्णुता, मिलनसारिता एवं निष्ठापूर्ण जीवन की अनुमोदना करते हुए उनके उन्नत जीवन की मंगलकामना करती हूँ।

स्वच्छता अभियान

कोलकाता।

तेयुप, कोलकाता-मैन द्वारा स्वच्छता शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें द्वितीय बटालियन एनडीआरएफ ने भूतनाथ मंदिर गंगा घाट शिविर में सहयोगी संस्था के रूप में अपना श्रमदान दिया। जिसमें द्वितीय बटालियन एनडीआरएफ केर असिस्टेंट कमिश्नर सुधीर द्विवेदी स्वयं अपने ३० सदस्यों के साथ उपस्थित थे। यहाँ कार्यकर्ताओं द्वारा घाट पर साफ-सफाई का कार्य किया गया।

द्वितीय शिविर भारतीय रेल के सहयोग से शालीमार रेलवे स्टेशन पर आयोजित किया गया, जिसमें सभी युवा कार्यकर्ताओं ने अच्छी सेवाभावना का परिचय दिया। कार्यक्रम में अभातेयुप के सदस्य व तेयुप, कोलकाता के पूर्व अध्यक्ष सुनील दुगड़, अजय पीचा, अणुव्रत समिति हावड़ा के अध्यक्ष दीपक नखत सहित सदस्य एवं अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे।



रक्तदान अमृत स्मरणोत्सव के आयोजन

नौगाँव।

अभातेयुप के तत्वावधान में तेयुप, सरदारशहर की ओर से एमबीडीडी के तहत रक्तदान शिविर का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कैप का शुभारंभ मुख्य अतिथि पंडित अनिल शर्मा, प्रायोजक परिवार से किशनलाल नाहटा, केवलचंद नाहटा, तेरापंथ सभा मंत्री राजीव दुगड़, महिला मंडल मंत्री मनीषा बैद, तेयुप परामर्शक संपत डोसी, तेयुप अध्यक्ष लोकेश सेठिया, तेयुप एवं तेरापंथ किशोर मंडल टीम, कन्या मंडल टीम की उपस्थिति रही। कन्या मंडल संयोजिका उर्वशी सेठिया ने अतिथियों का तिलक से स्वागत किया। कैप में २०६ यूनिट रक्तदान हुआ। कैप के समर्थन में पं० अनिल शर्मा, पूर्व विधायक अशोक पीचा, सभापति नगर परिषद राजकरण चौधरी, एसडीएम हरीसिंह शेखावत, तहसीलदार दिव्या चावला, तहसीलदार रीडर अशोक पारीक अन्य सभी सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं ने सहयोग का विश्वास दिया। कैप का सौजन्य आर०जे ग्रुप स्व० रेखचंद नाहटा परिवार रहा।

साउथ हावड़ा।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा यूनिस्टर मेटल्स प्राइवेट लि० पर रक्तदान शिविर का आयोजन ओम ब्लड बैंक के सहयोग से किया गया। तेयुप टीम के प्रयासों से कुल ६७ यूनिट रक्त एकत्र किया गया। रक्तदान शिविर में विशेष अतिथि के रूप में सुशील बाहेती एवं गौरव झवर पधारे। तेयुप मंत्री अमित बेगवानी ने रक्तदान शिविरों की विस्तृत जानकारी दी।

कार्यक्रम संयोजक पारस बरड़िया एवं भरत भंडारी ने बताया कि हम समय-समय पर आगे बभी मानव सेवा के लिए तत्पर रहते हुए रक्तदान शिविरों का आयोजन करते रहेंगे। इस रक्तदान शिविर के आयोजन में मनोज बैद का विशेष श्रम रहा।

फरीदाबाद।

अभातेयुप के द्वारा निर्देशित एमबीडीडी रक्तदान अमृत स्मरणोत्सव के अंतर्गत तेयुप, फरीदाबाद द्वारा विभिन्न कॉपोरेट्स एवं संस्थाओं के साथ मिलकर ३२६ यूनिट रक्तदान करवाया। पॉलिमेडिकयूर इंस्ट्रूमेंट्स लि० में ८० यूनिट, बंगाल इंडस्ट्रीज में ५१ यूनिट, इंडो ऑटो टेक में १६८ यूनिट, नाहटा कम्पर्ट सिस्टम्स प्राइवेट लिमिटेड में ३० यूनिट लगातार सात दिनों तक चले इस महा-अभियान में तेयुप के सभी रक्तदान संयोजक, पदाधिकारी, कार्यसमिति सदस्य, अभातेयुप प्रभारी एवं सदस्यगण, तेयुप के पूर्व अध्यक्ष-मंत्री, परामर्शकगण, थिंक टैंक एवं तेरापंथ किशोर मंडल सभी के सक्रिय सहयोग से कार्यक्रम सफल रहा। तेयुप द्वारा विनीत बैद, राजेश जैन एवं सभी का आभार व्यक्त किया।

ज्ञानशाला संस्कार निर्माण का श्रेष्ठ उपक्रम

साउथ कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तथा तेरापंथ सभा के तत्वावधान में द्विदिवसीय ज्ञानशाला प्रशिक्षिका रिफ्रेसर कार्यशाला का शुभारंभ तेरापंथ भवन में हुआ। जिसमें तेरापंथ महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया, ज्ञानशाला के राष्ट्रीय संयोजक सोहनलाल चोपड़ा, ज्ञानशाला राष्ट्रीय अध्यापक डालमचंद नवलखा, तेरापंथ महासभा के उपाध्यक्ष नेमचंद बैद, आंचलिक प्रभारी तेजकरण बोथरा विशेष रूप से उपस्थित थे।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि भारतीय संस्कृति में संस्कारों का बहुत बड़ा महत्त्व है। संस्कारों से ही

व्यक्ति की पहचान होती है। संस्कार नैसर्गिक व अधिगमज दोनों प्रकार के होते हैं। संस्कार प्राप्ति के तीन स्थान हैं—घर, विद्यालय, धर्म स्थान। संस्कार के बीजारोपण का समय बचपन है। बचपन में जो संस्कार आते हैं वे पचपन में नहीं आते। संस्कारों के विकास के लिए ज्ञानशाला महत्त्वपूर्ण उपक्रम है। ज्ञानशाला ज्ञान वृद्धि का उपक्रम है।

इस अवसर पर बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत का संगान किया। तेरापंथ महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने कहा कि ज्ञानशाला का कार्यक्रम संस्कार निर्माण का कार्यक्रम संस्कारों के साथ धर्मसंघ की जड़ों को मजबूत करता है व

भविष्य को सुरक्षा प्रदान करता है। ज्ञानशाला के संयोजक सोहनलाल चोपड़ा ने कहा कि देशभर में ५७० ज्ञानशाला, १८ हजार ज्ञानार्थी लाभान्वित होते हैं। ज्ञानशाला के पास चार हजार प्रशिक्षिकाएँ हैं। तेरापंथ महासभा के उपाध्यक्ष नेमचंद बैद ने कहा कि तेरापंथ महासभा भविष्य की सुरक्षा रखने वाली संस्था है। राष्ट्रीय ज्ञानशाला के अध्यापक डालमचंद नवलखा, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष विनोद कुमार चोरड़िया, दक्षिण बंगाल ज्ञानशाला के प्रभारी डॉ० प्रेमलता चोरड़िया ने विचारों की प्रस्तुति दी। मंगलाचरण ज्ञानशाला के प्रशिक्षिकाओं ने किया। संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

तेयुप द्वारा सेवा कार्य

सरदारशहर।

तेयुप, सरदारशहर एवं जीवन रेखा (हार्ट एवं क्रिटिकल केयर हॉस्पिटल) चुरु के संयुक्त तत्वावधान में निःशुल्क चिकित्सा परामर्श एवं जाँच शिविर का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। इस शिविर में हृदय रोग विशेषज्ञ, वरिष्ठ फिजीशियन एवं वरिष्ठ हड्डी एवं जोड़ रोग विशेषज्ञ डॉक्टर्स की सेवाएँ उपलब्ध रही। शिविर में हीमोग्लोबिन, ब्लड शुगर, सीबीसी, बीपी, ईसीजी आदि बीमारियों की जाँचें निःशुल्क रही। शिविर में एक्स-रे की सुविधा तेयुप द्वारा निःशुल्क की गई।

साध्वी सुदर्शनाश्री जी ने मंगलपाठ सुनाया। निःशुल्क चिकित्सा परामर्श एवं जाँच शिविर में १२५ रोगी लाभान्वित हुए। इस शिविर में सहयोगी संस्थाएँ तेरापंथी सभा, तेममं, महाप्रज्ञा अध्यात्म एंड एजुकेशनल फाउंडेशन रही।

शिविर में तेरापंथी सभा मुख्य ट्रस्टी राजेश बुच्चा, सभा मंत्री राजीव दुगड़, सभा उपाध्यक्ष महेंद्र बरड़िया, तेयुप अध्यक्ष लोकेश सेठिया, मंत्री गौतम सेठिया सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। तेयुप, किशोर मंडल, कन्या मंडल टीम के सदस्यों ने व्यवस्थाओं में सहयोग दिया।

विद्यार्थी चरित निर्माण अभियान

जयपुर।

विद्याधर नगर स्थित मुस्लिम स्कूल मदरसा में अणुव्रत समिति, जयपुर द्वारा विद्यार्थी चरित्र निर्माण अभियान के चतुर्थ कार्यक्रम के अंतर्गत मुनिश्री तत्त्वरुचि जी ने मुस्लिम बालक-बालिकाओं को ईमान पर चलने और नशामुक्त रहने के संकल्प करवाए। साथ ही व्यक्तिगत विकास हेतु जीवन विज्ञान की जानकारी देते हुए प्रेक्षाध्यान के प्रयोग भी करवाए।

इस अवसर पर मोहम्मद सदर हुसैन सचिव, मोहम्मद इख्तियार खान कैशियर, इम्मामुद्दीन मौलवी उपस्थित थे। आभार ज्ञापन तेरापंथी सभा के मंत्री सुरेंद्र सेखानी ने किया।



युवा बनें जीवन रक्षक कार्यशाला

उत्तर हावड़ा।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, उत्तर हावड़ा द्वारा तेरापंथ टास्क फोर्स का फिजिकल कैंप हरिणघाटा में आयोजित किया गया। एनडीआरएफ ०२ बटालियन द्वारा प्रशिक्षित तेरापंथ टास्क फोर्स के कैडेट्स ने विभिन्न विषयों पर थियोरिटिकल एवं प्रैक्टिकल ट्रेनिंग दी गई।

इस कार्यक्रम में एनडीआरएफ ०२ बटालियन के राकेश मंडल, डी०के० यादव, अभिषेक कुमार राव, गोविंदर सिंह एवं मनीष दुबे ने २२ संभागियों को मेडिकल आपदा, पानी आपदा, आग आपदा, साँप

या जानवर के काटने से निपटने के गुण सिखाए। अभातेयुप सदस्य एवं तेयुप, उत्तर हावड़ा के अध्यक्ष संदीप कुमार डागा ने सभी का स्वागत किया। इस कैंप की उपयोगिता बताते हुए कार्यक्रम को सभी के लिए महत्वपूर्ण बताया।

अभातेयुप सदस्य एवं टीटीएफ के जोनल प्रभारी अजय पींचा, अभातेयुप सदस्य सुनील दुगड़, तेयुप मुर्शिदाबाद के अध्यक्ष दीप पुगलिया सहित अनेक गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। अभातेयुप सदस्य एवं तेयुप, उत्तर हावड़ा के अध्यक्ष संदीप कुमार डागा एवं मंत्री विनीत कोठारी

ने मोमेंटो देकर एनडीआरएफ ०२ बटालियन का सम्मान किया।

तेयुप के ४ सदस्यों एवं तेरापंथ किशोर मंडल, उत्तर हावड़ा के ८ सदस्यों, पूर्वांचल के ६ सदस्यों, तेयुप मुर्शिदाबाद के १ सदस्य एवं तेरापंथ किशोर मंडल दक्षिण हावड़ा के १ सदस्य, कुल २२ सदस्यों ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई। तेयुप उत्तर हावड़ा के मंत्री विनीत कोठारी ने सभी को सर्टिफिकेट प्रदान करवाया। तेयुप, उत्तर हावड़ा के कार्यकारिणी समिति सदस्य एवं किशोर मंडल प्रभारी भरत कुमार बैद ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

निःशुल्क आई कैंप का आयोजन

सैंधिया।

तेयुप, सैंधिया द्वारा मेगा निःशुल्क आई कैंप का आयोजन बीरभूम विवेकानंद होमियोपैथिक मेडिकल कॉलेज में किया गया। आई कैंप के चिकित्सा सेवा कार्य के लिए कोलकाता से शंकर नेत्रालय की १० डॉक्टर की टीम की उपस्थिति रही।

मेगा आई कैंप के द्वारा सैंधिया और आसपास के ग्रामीण क्षेत्र में निम्न वर्ग के लोगों की आँखों का परीक्षण निःशुल्क किया गया। बीरभूम विवेकानंद होमियोपैथिक कॉलेज में आयोजित मेगा आई कैंप में ४१६ लोगों को निःशुल्क आँखों की चिकित्सा का लाभ मिला, जिसमें कुल १५५ चश्मे तेयुप, सैंधिया द्वारा निःशुल्क वितरण किए जाएंगे।

इस कैंप के अंतर्गत ७१ जरूरतमंद लोगों का मोतियाबिंद का ऑपरेशन भी शंकर नेत्रालय, कोलकाता में निःशुल्क कराया जाएगा। दो दिवसीय कार्य में संपूर्ण तेरापंथ समाज का योगदान रहा। तेयुप द्वारा शंकर नेत्रालय एवं होमियोपैथिक कॉलेज को उनकी सेवाएँ के लिए मोमेंटो से सम्मानित किया गया।

कैंप में सैंधिया एमसलए नीलावती साह की उपस्थिति रही और सफलतापूर्वक कार्यक्रम को आयोजित करने के लिए सैंधिया को बधाई दी। उन्होंने अध्यक्ष अभिषेक छाजेड़ को आगे सेवा कार्य के लिए प्रोत्साहन दिया। अभातेयुप सदस्य सुमित छाजेड़, अध्यक्ष अभिषेक छाजेड़ एवं पूरे तेयुप द्वारा उनको मोमेंटो से सम्मानित किया गया।

दो दिवसीय मेगा आई कैंप में सैंधिया में पहली बार आई डोनेशन जागरूकता कार्यक्रम चलाया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत जैन समाज के अलावा भी अन्य समुदाय के लोगों ने आई डोनेशन करने का संकल्प लेते हुए यूनिफार्म डोनर प्लेज किया।

आई डोनेशन जागरूकता कार्यक्रम को सैंधिया में शुभारंभ करने में आई डोनेशन राष्ट्रीय सह-संयोजक सुनील दुगड़ की प्रेरणा एवं सराहनीय योगदान रहा। प्रारंभ से ही मेगा आई कैंप के मार्गदर्शक के रूप में शाखा प्रभारी अजय पींचा का सकारात्मक योगदान रहा। कैंप में सभी तेयुप, सैंधिया के सदस्यों का श्रम एवं सहयोग रहा।

स्वस्थ भारत शिविर का आयोजन

बैंगलुरु।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायनोस्टिक सेंटर आडुगुडी द्वारा आडुगुडी पुलिस क्वार्टर्स में स्वस्थ भारत कैंप का आयोजन किया गया। डीसीपी साउथ सिहराजू के सहयोग से पुलिस क्वार्टर्स में कैंप करने की स्वीकृति प्राप्त हुई। आयोजित इस कैंप में ब्लड प्रेशर, शुगर, लिपिड प्रोफाइल, ब्लड यूरिया, यूरिक एसिड, डेंटल चेकअप एवं फिजियोथैरेपी आदि जाँचों निःशुल्क की गई।

तेयुप अध्यक्ष रजत बैद, निवर्तमान अध्यक्ष प्रदीप चौपड़ा, ललित सेठिया, जितेंद्र कोचर, प्रवीण बोहरा, सुधीर पोकरणा, प्रसन्न धोका, खुशहाल बैद आदि की उपस्थिति रही। इस कैंप में पुलिस क्वार्टर्स से १६० लाभार्थियों ने लाभ प्राप्त किया। सहमंत्री संदीप चौपड़ा, एटीडीसी संयोजक प्रणय पोकरणा, सुरेश संचेती का विशेष सहयोग रहा।

श्रीमान श्रीमती एमबीबीएस कार्यशाला का आयोजन

गांधीनगर, बैंगलोर,

मुनि हिमांशु कुमार जी के सान्निध्य में अभातेयुप के ब्यक्तित्व विकास कार्यशाला के अंतर्गत तेयुप, बैंगलुरु द्वारा 'श्रीमान श्रीमती एमबीबीएस कार्यशाला' का आयोजन किया गया। मुनि हिमांशु कुमार जी के मुखारविंद से नमस्कार महामंत्र के मंगल मंत्रोच्चार से कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। तेयुप अध्यक्ष रजत बैद ने स्वागत वक्तव्य दिया।

मुनि हेमंत कुमार जी ने कहा कि परिवार में श्रीमान श्रीमती के साथ बच्चों की भी अहम भूमिका होती है। परिवार में बड़े सदस्य छोटे के प्रति वात्सल्य भाव रखें और छोटे सदस्य बड़ों के प्रति विनय का भाव रखें, इससे परिवार सुखी और स्वस्थ

रह सकता है।

मुनि हिमांशु कुमार जी ने कहा कि माता-पिता अपनी संतान को इतना योग्य बनाएँ कि वह समाज की अग्रिम पंक्ति में बैठने के लायक बन पाएँ और बच्चे ऐसा कार्य करके दिखलाएँ, जिससे लोग उनके पिता-पिता से पूछें की आपने क्या पुण्य किए जो ऐसी उत्तम संतान प्राप्ति हुई। मुनिश्री ने भाषा, भूषा, भोजन, भवन एवं भावना को संयमित और स्वस्थ रखने की प्रेरणा दी। आपने कहा कि माता-पिता

जन्मदाता और जीवनदाता बनने के साथ जीवन निर्माता भी बनें।

कार्यशाला में प्रश्नोत्तरी के विजेता लक्ष्य जैन, चिराग नाहर, जिया कोठारी, नीलम सुराणा, संजय धारीवाल को प्रायोजक परिवार से कांता लोढ़ा एवं तेयुप अध्यक्ष रजत बैद ने सम्मानित किया। कार्यशाला के प्रायोजक कांता प्रकाश लोढ़ा परिवार का परिषद की ओर से सम्मान किया गया। संचालन मंत्री रोहित कोठारी ने किया।

◆ अध्यात्म के क्षेत्र में अनासक्ति का बड़ा महत्त्व है। आसक्ति आदमी को डुबोने वाली होती है। अनासक्ति के कारण आदमी ऊपर उठता है। गृहस्थ जीवन में भी अनासक्ति की साधना होनी चाहिए।

— आचार्यश्री महाश्रमण

स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन

राजाजीनगर।

तेयुप, राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायनोस्टिक सेंटर एवं डेंटल केयर श्रीरामपुरम के अंतर्गत विश्व हृदय दिवस के उपलक्ष्य में रियायती दर पर हृदय संबंधित जाँच शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर की शुरुआत सामुहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। शिविर में हृदय से संबंधित तीन विभिन्न प्रकार की जाँच समावेश की गई। कुल २० सदस्यों ने लाभ लिया। शिविर को आयोजित करने में प्रायोजक के रूप में स्व० कमला बेन, स्व० हंसराज कानूगा की पुण्य स्मृति में कानूगा परिवार जालौर ने अपनी स्वीकृत प्रदान की।

तेयुप द्वारा उपस्थित सदस्यों को एटीडीसी श्रीरामपुरम द्वारा प्रदत्त विभिन्न सेवाएँ, डॉक्टर की उपलब्धता एवं अन्य जानकारी से अवगत करवाया। स्थानीय लोगों ने एटीडीसी के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष कमलेश गन्ना, जयंतिलाल गांधी, कमलेश चौरडिया एवं अजिंक्या चौधरी ने अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। एटीडीसी स्टाफ पवन, स्मिता एवं दीपाश्री का श्रम नियोजित हुआ।



रक्तदान शिविर के आयोजन

मैसूर

तेयुप के सहयोग से 'द बैटर हैंड्स' के तत्वावधान में एटीडीसी में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में एएसपी परशुराम (डिप्टी कमिश्नर ऑफ पुलिस), डॉ० रुपा (डिप्टी मेयर), गिरीश (डायरेक्टर जीवधारा) उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन कर किया गया। टीबीएच द्वारा सभी का स्वागत किया गया। मुख्य अतिथि द्वारा शुभकामनाएँ दी गईं। तेयुप सदस्य सुनील देरासरिया द्वारा अभातेयुप द्वारा संचालित एमबीडीडी तथा एटीडीसी प्रभारी मुकेश गुगलिया द्वारा एटीडीसी मैसूर के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई।

टीबीएच सदस्य मुस्कान दक द्वारा सभी को धन्यवाद दिया गया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष प्रकाश दक, मंत्री महावीर मारु, तेयुप अध्यक्ष कमलेश गांधी, तेयुप सदस्य एवं अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान द्वारा हुआ। कुल ३५ यूनिट रक्त एकत्रित हुआ।

कालू

अभातेयुप की ओर से गाँव में ओसवाल पंचायत भवन मुख्य बाजार कालू में तेयुप के द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। रक्तदान के लिए गाँव के युवाओं में उत्साह रहा। सभी तेयुप के आयोजककर्ताओं को आभार व सफल आयोजन के लिए बधाई।

सूरतगढ़

अभातेयुप के निर्देशानुसार तेयुप द्वारा मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के तहत रक्तदान शिविर का आयोजन आशीर्वाद क्लासेस के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। शिविर का शुभारंभ तेरापंथ सभा अध्यक्ष चंद्रेश सेठिया, आशीर्वाद क्लासेस के संस्थापक राजेंद्र रणवा ने रिबन की गाँ खोलकर किया।

शिविर में कुल १२४ यूनिट रक्त संग्रह किया गया। तेयुप द्वारा सभी रक्तदाताओं को उपहार व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। प्रकल्प प्रभारी प्रेम श्रीमाल ने शिविर की विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम में तेयुप के अध्यक्ष पवन सेठिया, मंत्री निखिल बैद, कोषाध्यक्ष आदित्य बाँटिया सहित अनेक पदाधिकारीगण, सदस्य एवं गणमान्यजन उपस्थित रहे।

उधना

अभातेयुप के तत्वावधान में तेयुप के द्वारा मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के अंतर्गत पाँच कैंप का आयोजन तेयुप द्वारा किया गया। जिसमें अरिहंत कॉम्प्लेक्स, मेन रोड इस कैंप में ३५ यूनिट, उधना कॉलेज में ३८ यूनिट, जलाराम सोसायटी, तेरापंथ भवन पांडेसरा में ३६ यूनिट, श्री साई रजिडेंसी, उधना में १०२ यूनिट एवं वैभव लक्ष्मी कॉम्प्लेक्स भेस्तान में ११८ यूनिट रक्त संग्रहण हुआ।

इस आयोजन में तेरापंथी सभा, उधना अध्यक्ष बसंतिलाल नाहर एवं टीम, महिला मंडल अध्यक्ष सोनू बाफना एवं टीम, अभातेयुप से पधारे मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव प्रभारी सौरभ पटावरी सहित अभातेयुप की क्षेत्रीय टीम, महासभा परिवार से लक्ष्मीलाल बाफना, अभातेमम से श्रेया बाफना, तेयुप, उधना अध्यक्ष हेमंत डांगी, मंत्री विकास कोठारी, एमबीडीडी के प्रभारी शैलेश बाफना सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

हम जीवन में अच्छाईयों को बढ़ाने का और बुराईयों को कम करने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण



नंदनवन, २४ अक्टूबर, २०२३

जीने की कला सिखाने वाले आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आगम वाणी की अमृत

वर्षा करते हुए फरमाया कि जैन दर्शन में छः द्रव्यों की अवधारणा प्राप्त होती है। पंचास्तिकाय की भी बात है। भगवती सूत्र

पंचास्तिकाय के पर्यायवाची शब्द दिए गए हैं। अनेक अभिवचन दिए गए हैं।

जीवास्तिकाय के २३ अभिवचन बतलाए गए हैं। जीव के अनेक रूपों का, स्थितियों को बताने वाले ये शब्द हो सकते हैं जैसे जीव हैं, वह प्राण को धारण करता है। प्राण, भूत और सत्त्व भी है। शुभ और अशुभ को स्वयं जानता है, इसलिए सत्त्व कहलाता है। जीव का एक नाम मानव दिया गया है। मनु का अर्थ होता है—ज्ञान। ज्ञान में उत्पन्न होने से उसे मानव कहा है। मानव यानी अनादिकाल से है नया नहीं है।

जीव का एक नाम आत्मा भी है। आत्मा अरूपी है, वह कर्ता है, भोक्ता है। शुद्ध स्वरूप में आत्मा निरंकार होती है। आत्मा

है, तो संसारी अवस्था में शरीर भी है। शरीर है, तो शरीर का नाश भी होता है। मृत्यु के आने के अनेक द्वार हैं। आयुष्य कर्म पूर्ण होते ही अनेक तरह से मृत्यु हो सकती है।

इंसान में कमियाँ हैं, तो विशेषताएँ भी हो सकती हैं। जैसे रावण ऋद्धि-लब्धि संपन्न व्यक्ति था। गलतियाँ उसने की तो फल भी भोगना पड़ा। राम-लक्ष्मण की जोड़ी भाइयों के लिए श्रेष्ठ उदाहरण है। दोनों हाथ मिलेंगे तो बद्धांजलि हो सकेगी। छोट भाई का बड़े भाई के प्रति समर्पण था। सीता हरण और सीता प्राप्ति के कुछ प्रसंगों को समझाया।

असद् भावों पर सद् भावों की विजय ही विजयादशमी होती है। कहा गया है कि रावण आगे तीर्थंकर बन मोक्ष में जाने वाला

है। हम जीवन में अच्छाईयों को बढ़ाने का और बुराईयों को कम करने का प्रयास करें, यह काम्य है।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि ज्ञान की किरणें आदमी को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाती हैं। कभी-कभी सोना भी प्राप्ति का कारण हो सकता है। महापुरुषों के जीवन से आदमी वास्तविकता को जान सकते हैं। मानव मन अनेक अपेक्षाओं से जुड़ा है पर हर कामना पूरी हो यह जरूरी नहीं। हमें भौतिकता से आध्यात्मिकता की ओर मुड़कर भीतर का सुख प्राप्त करना है। भगवान द्वारा प्रज्ञप्त चार सुख-शैल्या को समझें। उनमें रमण करने का प्रयास करें। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

पुद्गल जगत के प्रति भी हम संयम का प्रयास रखें : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन, २५ अक्टूबर, २०२३

जन-जन को आध्यात्मिक चेतना प्रदान कराने वाले आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि भगवती सूत्र में कहा गया है—हमारी इस लोकाकाश की दुनिया में छः द्रव्य हैं। उनमें अमूर्त द्रव्य तो अनेक है, पर मूर्त द्रव्य एक पुद्गलास्तिकाय ही है। मूर्त वह होता है जिसमें वर्ण, गंध, रस और स्पर्श है। ये चार चीजें पुद्गल में होती हैं।

पुद्गल के दो प्रकार हैं—जीव युक्त शरीर वाले और जीव मुक्त शरीर वाले। जो सचित हैं, वो जीव युक्त शरीर है। अचित वस्तुएँ जीव मुक्त शरीर वाले हैं। धर्मसंघ के भोजनालय में अनंतकाय जीव वाले जमीकंद का उपयोग न हो। पुद्गल का लघुतम भाग है—परमाणु। पुद्गल की सबसे छोटी इकाई है। परमाणु का विभाजन नहीं किया जा सकता है।

प्रश्न किया गया है—भंते! परमाणु कितने प्रकार का होता है? उत्तर है—परमाणु चार प्रकार का होता है—द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव परमाणु। इन चार प्रकारों में द्रव्य परमाणु कितने प्रकार का होता है? द्रव्य परमाणु भी चार प्रकार का है—अच्छेद परमाणु उसका छेदन नहीं जा सकता है। वह अभेद्य है, उसका भेदन नहीं किया जा सकता है। वह अदाह्य है, परमाणु को जलाया नहीं जा सकता है। चौथी बात है—अग्राह्य उसको हाथ में लेकर नहीं दिखाया जा सकता। ये चार विशेषताएँ द्रव्य परमाणु की होती हैं।

परमाणु और आत्मा में समानता है। आत्मा भी अच्छेद, अभेद्य, अदाह्य और अग्राह्य है। प्रश्न किया गया है—क्षेत्र परमाणु क्या है, कितने प्रकार का है।

आकाश का एक-एक प्रदेश अपने आपमें क्षेत्र परमाणु है। इसके चार स्वरूप-विशेषताएँ हैं—अनर्ध, अमध्य, अप्रदेश और अविभाज्य।

प्रश्न किया गया—काल-परमाणु कितने प्रकार का प्रज्ञप्त है? काल-परमाणु की भी चार विशेषताएँ हैं—अवर्ण, अगंध, अरस और अस्पर्श। प्रश्न है—भाव परमाणु कितने प्रकार के प्रज्ञप्त हैं? पुद्गल की लघुतम इकाई के तो पर्याय हैं, उसके जो मूल लक्ष्य हैं, वो भाव परमाणु हैं। भाव परमाणु के चार प्रकार हैं—वर्णवान, गंधवान, रसवान और स्पर्शवान।

इस पुद्गल जगत को हम काम में लेते हैं, यह हमारा बहुत उपकारी है। पुद्गल जगत के प्रति भी हम संयम का प्रयास रखें।

गृहस्थ भी पुद्गलों का अनपेक्षित संग्रहण न करें। उपयोग में भी संयम रखें। ये अध्यात्म से संबंधित साधना की बात हो जाती है। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित ग्रंथ प्रकीर्णक संचय जो समणी कुसुमप्रज्ञाजी द्वारा संपादित है, पूज्यप्रवर को लोकार्पित किया गया। समणी कुसुमप्रज्ञा जी ने इस ग्रंथ के विषय में जानकारी दी। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया। इस तरह के कार्य करने में समणी कुसुमप्रज्ञा अद्वितीय हैं। अनेक क्षेत्रों में इनका विकास है। ज्ञान के क्षेत्र में अच्छा कार्य-विकास करती रहें।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

कठिनाई-विपत्ति आने पर भी धर्म को...

(पृष्ठ १२ का शेष)

जो धर्म के तत्त्व को समझकर भी धर्म को छोड़ यदि वह आदमी भोगों में लिप्त हो जाता है मानो वह कल्पवृक्ष को उखाड़कर धतूरे का पौधा लगाता है। चिंतामणी रत्न को फेंककर काँच का टुकड़ा डिबिया में रखता है। गजराज हाथी को बेचकर गधा खरीदकर घर में लाता है। ऐसे लोग मूढ़ होते हैं। विपत्ति में भी धर्म को नहीं छोड़ना चाहिए।

विपत्ति का कारण है कि पता नहीं किस जन्म में इस जीव ने कर्म बाँधे होंगे, उनका भुगतान तो करना होगा। विपत्ति आई है, मतलब मेरा पुराना कर्ज उतर रहा है, मैं ऋण-मुक्त हो समता-शांति से सहन करूँ, ऐसा चिंतन करना चाहिए। कठिनाई-विपत्ति आने पर भी धर्म को छोड़ने का चिंतन भी नहीं आना चाहिए। धर्म को तो पकड़कर रखें। कठिनाई आए तो आए। साधुपन या श्रावकपन सुरक्षित बना रहे। हम अध्यत्ममय बने रहें।

आज शरद पूर्णिमा है। अरहंत तो शरद पूर्णिमा के चंद्रमा के समान निर्मल होते हैं। अभातेयुप के निर्देशन में त्रिदिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन पूज्यप्रवर की सन्निधि में कल से शुरू हो गया है। इसकी थीम है—नवोदय। राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने अभातेयुप के विकास के आयामों को बताया। अभातेयुप के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेश कुमार जी ने कहा कि यह संगठन गुरु-दृष्टि की आराधना करते हुए विकास-मार्ग पर गतिमान है।

अभातेयुप का प्रतिवेदन पूज्यप्रवर को समर्पित किया गया। सुभाष रुणवाल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि आज का युग टेक्नोलॉजी का युग है। इस युग ने आज के युवक को व्यस्त बना दिया है। तेरापंथ धर्मसंघ के लिए यह गौरव का विषय है कि टेक्नोलॉजी में व्यस्त रहते हुए भी हमारे युवक अध्यात्म के बारे में चिंतन कर रहे हैं। अपनी आध्यात्मिक शक्तियों के जागरण के बारे में चिंतन करते हुए आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश कर रहे हैं। तपोयज्ञ कर रहे हैं। इनके भीतर धर्म और अध्यात्म का बीज है, वे उसके द्वारा अनेक आयामों से समाज का विकास कर रहे हैं।

पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया कि धर्म की कला के सामने सब कलाएँ फीकी हैं। विवेक ने कर्मणा जैन की बात कही तो जीवन में अहिंसा-संयम आए। रुणवाल ने भी बात बताई। अभातेयुप के अधिवेशन का समय है। युवक और किशोर इससे जुड़े हैं। इनके द्वारा अनेक गतिविधियाँ आध्यात्मिक व समाज सेवा के लिए चल रही हैं। आगे और विकास करता रहे।

सिने स्टार विवेक ओबेरॉय भी श्रीचरणों में उपस्थित हुए। उन्होंने अपनी भावना अभिव्यक्त करते हुए कहा कि मैं भी कर्मणा जैन हूँ। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

'संघ के प्रति हमारा दायित्व' कार्यशाला का आयोजन

तिरुपुर।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्रीजी के सान्निध्य में 'संघ के प्रति हमारा दायित्व कार्यशाला' का आयोजन किया गया। साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने कहा कि मनुष्य एक सीढ़ी है। जिस सीढ़ी से नीचे उतरा जाता है उससे ऊपर भी चढ़ा जा सकता है। चढ़ने और उतरने की सीढ़ी एक ही है। व्यक्तित्व विकास का भी यह फार्मूला है। जब वह संघ से जुड़ता है तो ऊपर चढ़ जाता है और अपने व्यक्तित्व का निर्माण कर ऊँचाई को माप लेता है। युवा गौरव, अमृतवाणी के संरक्षक, अभातेयुप के पूर्वाध्यक्ष, जैन विश्व भारती के पूर्वाध्यक्ष एवं वर्तमान में दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने कहा कि हमारे धर्मसंघ की पहचान अनुशासित, मर्यादित, संगठित और व्यवस्थित रूप में है। जन्मघुटी की तरह यह संस्कार हमें मिले हैं। परिवार के प्रति जैसे हम जागरूक हैं वैसे ही संघ, समाज के प्रति भी जागरूक रहें।

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी दक्षप्रभा जी, साध्वी मेरुप्रभा जी ने मंगलाचरण के साथ किया। अनिल आंचलिया ने सभी का स्वागत किया। हेमंत पारख ने सभी का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मयंकप्रभा जी ने किया।



अभातेयुप द्वारा अलंकरण-पुरस्कार सम्मान समारोह का आयोजन

मोक्ष मार्ग की ओर प्रशस्त होने के लिए संवर की साधना कर निर्जरा करें : आचार्यश्री महाश्रमण



नंदनवन, २६ अक्टूबर, २०२३

जिनशासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने निर्ग्रन्थ प्रवचन का रसास्वाद कराते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में भूगोल संबंधी प्रश्न किया गया है कि भंते! कर्म-भूमियाँ कितनी प्रज्ञप्त हैं? जैन वाङ्मय के भौगोलिक स्थिति में कर्मभूमि-अकर्मभूमि की बात आती है। उत्तर दिया गया—गौतम! पंद्रह कर्म-भूमियाँ प्रज्ञप्त हैं—पाँच भरत क्षेत्र, पाँच ऐरावत क्षेत्र और

पाँच महाविदेह क्षेत्र।

हम जहाँ रह रहे हैं, वह जम्बूद्वीप का एक भरत क्षेत्र है। प्रश्न होता है कि कर्मभूमि संज्ञा क्यों दी गई है? बताया गया है कि ये भूमियाँ ऐसी हैं कि जहाँ शुभ कर्म और अशुभ कर्मों का अर्जन होता है, इसलिए वे कर्म भूमियाँ कहलाती हैं। प्रश्न ये भी हो सकता है कि इनके सिवाय के क्षेत्रों में कर्म का बंध नहीं होता है क्या? प्रकृष्ट रूप से कर्मों का बंध इन कर्म-भूमियों

में होता है, वैसे अन्य भूमियों के जीव भी कर्म-बंध करते हैं।

सातवें नरक में जाने वाले अशुभ कर्मों का बंध करने वाले इन भरत आदि क्षेत्रों में होते हैं। सर्वार्थ सिद्ध देवलोक में जाने वाले मनुष्य भी यहाँ ही होते हैं। उत्कृष्ट सबसे ज्यादा दुःख वाला स्थान सातवाँ नरक है, तो उत्कृष्ट सुख-वैभव प्राप्त करने वाला स्थान सर्वार्थ सिद्ध विमान है। सातवीं नरक में भी उत्कृष्ट आयुष्य ३३ सागरोपम का होता है, तो वह सर्वार्थ विमान में भी होता है। उत्कृष्टता के कारण ये कर्म-भूमियाँ कहलाती हैं।

असि, मसि, कृषि, विद्या और वाणिज्य रूप छ कर्मों की स्थिति इन कर्म-भूमियों में ही होती है। जितने तीर्थकर होते हैं, वे इन्हीं कर्म-भूमियों में ही होते हैं। साधु भी यही होते हैं। इनको साधना भूमि भी कहा जा सकता है। आचार्य—उपाध्याय, श्रमणोपासक भी इन्हीं कर्म-भूमियों में ही होते हैं।

अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी काल के हिसाब से स्थिति में थोड़ा फर्क है। पाँच महाविदेह अलग है और पाँच ऐरावत, पाँच भरत—ये दस क्षेत्र अलग तरह के होते हैं। भरत और ऐरावत क्षेत्र में हमेशा तीर्थकर नहीं रहते, समय-समय पर ही तीर्थकर होते हैं, जबकि महाविदेह में मेशा तीर्थकर विद्यमान रहते हैं। भरत और ऐरावत में २४-२४ तीर्थकर होते हैं, जबकि महाविदेह क्षेत्र में कम से कम २० और उत्कृष्ट १६० तीर्थकर हो सकते हैं।

हमारे भारत क्षेत्र में वर्तमान अवसर्पिणी काल में प्रथम तीर्थकर भगवान

ऋषभ और अंतिम २४वें तीर्थकर भगवान महावीर हुए हैं। महाविदेह के तीर्थकर पाँच महाव्रत और सप्रतिक्रमण की बात नहीं कहते। वहाँ चतुर्याम धर्म की बात बताई गई है। भरत और ऐरावत क्षेत्र में भी प्रथम और अंतिम तीर्थकर के समय पाँच महाव्रत और सप्रतिक्रमण की बात की प्रज्ञपना करते हैं। बीच के २२ तीर्थकर महाविदेह की शैली से चलते हैं। चतुर्याम धर्म पालने वाले होते हैं।

हमें वर्तमान में कर्म-भूमि में जीवन जीने का अवसर प्राप्त है। कर्म-भूमि में धर्म-साधना अच्छी हो सकती है। पाप भी होते हैं। वर्तमान में यहाँ तीर्थकर नहीं है। कुछ वर्षों बाद पुनः यहाँ भगवान महावीर की तरह तीर्थकर होने वाले हैं।

श्रमणोपासक भी देवगति में जाने वाले होते हैं। पर अगर उनके आचार ढीले हो गए, दोषों की आलोक्यणा-प्रतिक्रमण नहीं किया तो वे देवगति में नीचे के देव के रूप में उत्पन्न हो सकते हैं। हम धर्म का कर्म अच्छा करें। संवर की साधना कर निर्जरा

भी करें और मोक्ष गति को प्राप्त करें।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में अलंकरण-पुरस्कार सम्मान समारोह का आयोजन पूज्यप्रवर की सन्निधि में हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने अलंकरण-पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं के बारे में बताया। 'युवा गौरव अलंकरण' चेन्नई से भरत मरलेचा को प्रदान किया गया। 'आचार्य महाश्रमण युवा व्यक्तित्व पुरस्कार' अहमदाबाद के धवल डोसी को प्रदान किया गया।

युवा गौरव प्रशस्ति पत्र का वाचन रमेश डागा ने किया। आचार्य महाश्रमण युवा व्यक्तित्व प्रशस्ति पत्र का वाचन जयेश मेहता ने किया। भरत मरलेचा एवं डॉ० धवल डोसी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया। अरविंद डोसी ने सपत्नीक पूज्यप्रवर से अब्रह्मचर्य सेवन के प्रत्याख्यान लिए। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।



कठिनाई-विपत्ति आने पर भी धर्म को छोड़ने का चिंतन भी नहीं आना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण



नंदनवन, २८ अक्टूबर, २०२३

तीर्थकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवान महावीर स्वामी वर्तमान अवसर्पिणी काल के अंतिम चौबीसवें तीर्थकर हुए हैं। हम भगवान को नमस्कार करते हैं। लोगस में भी चौबीस तीर्थकरों की

अर्हत् भक्ति की गई है। लोगस के सात श्लोक अर्हत् भक्ति के लिए प्रसिद्ध है।

कई लोग तो लोगस की पूरी माला फेरते हैं। पूरी माला न हो तो ५४ या २७ बार भी जप किया जा सकता है। तीर्थकरों की स्तुति-भक्ति एक भक्ति योग का प्रयोग यह लोगस का पाठ हो जाता है। इसमें

१-१ तीर्थकर का नाम लेकर वंदना की गई है। इसमें भगवान महावीर को वर्धमान नाम से वंदन किया गया है। इसमें २५ नाम आए हैं। सुविहिं च पुफ्फदंतं एक ही तीर्थकर के दो नाम आए हैं।

श्लोक-रचना की विधि-व्यवस्था को बनाए रखने के लिए हो सकता है। दो नाम लिए गए हों। और भी कोई रहस्य साधना की दृष्टि से २५ के योग के लिए हो सकते हैं। कार्य-कारण हो सकता है। नवमें तीर्थकर के दो नाम बताए गए हैं।

पन्नमे च सुरेन्द्रे च---। श्लोक में भगवान महावीर को नमस्कार किया गया है। इस श्लोक में उनकी विशेषता बताई गई है—निर्विशेष मनस्काय। जिनका मन निर्विशेष था। निर्विशेष यानी सम चित्त-मन वाले थे। वे अनुकूलता और प्रतिकूलता दोनों

में सम रहें। कौशिक में दोनों आ गए नागराज और देवराज। देवराज ने प्रणाम किया तो भी सम रहे तो चंडकौशिक ने दंशा तो भी सम रहे। प्रभु भगवान ने मोहनीय कर्म का

नाश किया और तुरंत केवलज्ञान, केवलदर्शन की प्राप्ति हो गई।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

